दर्द
इन्दिव
172
८११.८
इन्दि/द

लेखिका उपन्यास लेखिका है, ...,
उपन्यास लेखिका के विस्तृत अध्ययन कवित्वमयी भाषा के अधिकार
.... गम्भीर अनुभव का परिचायक है।

—कन्हैया लाल ओझा
कलकत्ता

..............इस उपन्यास में तुम कवि हो गई हो, दर्शन शास्त्र
के सूत्रो, सिद्धान्तों के सौन्दर्य को तुमने कविता में लिखा है।

—डा० मालती शर्मा

...............अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्ततम वातावरण के उपयोग
की क्षमता पर चमत्कृत हूँ।

—डा० श्याम सुन्दर शुक्ल
काशी हिन्दू विश्व वियालय

Read pure poetry written in Prose.

—श्री बलदेव तायल

साहित्य आपकी इस कृति से और सशक्त हुई है, साहित्य ही नहीं विचार धारा
भी– दर्शन की अति उत्तम परिभाषा की है आपने,

—श्री आर. के. त्रिवेदी
भू. पूर्व राज्यपाल (गुजरात)

I am proud to have been deserving of such a deep philosophy from a friend. Such scholorship and achievement. Your pen is worth praising.

—Gulabdal Brokey

............आपको जीवन और समाज का व्यापक अनुभव है दर्शन
का प्रस्तुतीकरण रोचक और यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत हुआ है। दर्शन के
पाठकों की अनंत जिज्ञासाएँ शान्त हुई हैं। इस उपन्यास के प्रणयन के हेतु
आपको बधाई।

—बालशौरि रेड्डी
निदेशक भारतीय भाषा परिषद (मद्रास)

इस उपन्यास लेखिका का यह पहला काव्य संग्रह आपके सन्मुख प्रस्तुत है।
दर्द, पीड़ा, गम्भीरता जो लेखिका की बपौती है– उन सबके साथ
इन्दिरा जी प्रस्तुत हैं— कवियत्री के रुप में। विश्वास है आपको उनका यह
प्रथम् प्रयास भी बहुत अच्छा लगेगा।

—प्रकाशक

दर्द

इन्दिरा

शान्ति प्रकाशन, आसन

रोहतक

© इन्दिरा

प्रकाशक : शान्ति प्रकाशन, आसन–124421 रोहतक (हरियाणा)

●

शाखा : 854/27, मॉडल टाउन, नजदीक दिल्ली रोड,
रोहतक– 124001 (हरियाणा)

●

404/5, मौहल्ला महाराम, भोलानाथ नगर,
शाहदरा, दिल्ली – 110032

●

डी– 19/219, नन्दनवन एपार्टमेंट, नजदीक भावसार होस्टल,
नवावाडज, अहमदाबाद– 380013

●

ए/7, गौतम एपार्टमेंट, महादेवनगर, बिलीमोरा– 396321
(गुजरात)

●

नेहरू रोड, सीमोगा– 577201 (कर्नाटक)

प्रथम संस्करण : 1992
मूल्य : पचहत्तर रुपये
लेज़र कम्पोजिंग : जोशी लेज़र प्रिंटर्स
कालकाजी, नई दिल्ली–110019

मुद्रक : कैपिटल आर्ट सर्विस, दरिया गंज, नई दिल्ली- 110002
Phones : 2240092, 3277539

DARD by INDIRA Price : Rs. 75.00

पुस्तक के रुप में यह,
मेरा,
पहला काव्य गीत है।
मेरी अनुभूति है,
कि
कविता,
मात्र,;
दर्द से उदय होती है,
पीड़ा,
ही
कविता की जननी है।
पापा की मृत्यु के,
उपरान्त,
मैंने,
जीवन जीना सीखा,
सीख कि
अनुभूतियाँ,
हास, परिहास, अश्रु,
या, जिस रुप में भी आप इसे स्वीकार करें
यह आपके सन्मुख है।

– इन्दिरा

31, सावन सोसायटी,
मनीनगर, बटवा रोड,
अहमदाबाद
दूरभाष– 372367

"I found myself liking -- It is very difficult to say why one starts to like any body -- Perhaps -- you normally start to like some body because you see resemblances between your self and other person."

- Anash

"Be not amazed beloved, if some times
my song grows dark - - - - -"

- Leopold Sedar Senghor

"- - - I go on believing in the possibility of love, I am convinced
that there will be mutual understanding among human beings, achieved
in spite of all the suffering, the blood, the broken glass."

–PABLO NERUDA

''जीवन जब भी तपता है ज्येष्ठ से कम नहीं होता''

–अनाश

" I feel lost empty and dead and yet life must go on."

- INDIRA

चाहने और न चाहने के बीच के कुछ क्षण ....,

* * * *

मनुष्य जब प्यार चाहने लगता है तो प्यार करना भूल जाता है,
प्यार करने से प्यार मिलता है, प्यार चाहने से प्यार नहीं मिलता।
चाहने की गल्ती शायद मैं कर बैठी।

—इन्दिरा

"People hate, as They love,
unreasonably."

- W. H.Thackersay

"Don't love me my dear
like your shadow
shadows fade at evening
and I want to keep you
right up to cockcrow."

- ANASH

“ समर्पित”

जीवन की आस्था, श्रद्धा, प्रेरणा
और प्यार को,
“ परम पूज्य मेरे पिता श्री
नारायण सीताराम दीवान को”

–इन्दिरा
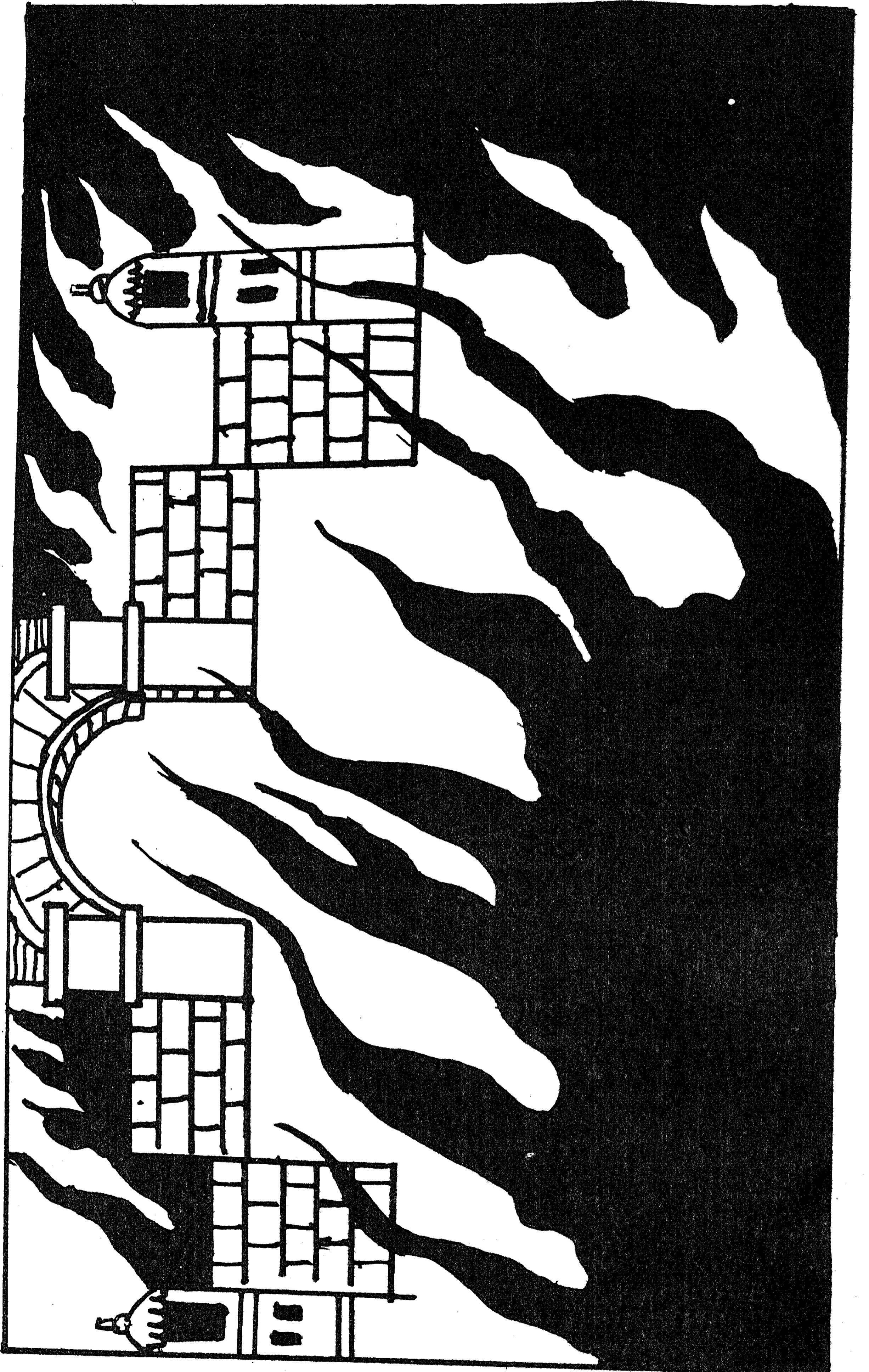
मौत बनेगी विधवा,
जिस दिन मैं मर जाऊँगी

जब से पुष्प बदनाम हो गये,
हम पापों. . . . .,
के,
मेहमान हो गये,
साँसे रख दी . . . . ,
गिरवी अपनी,
जीते जी श्मशान हो गये।
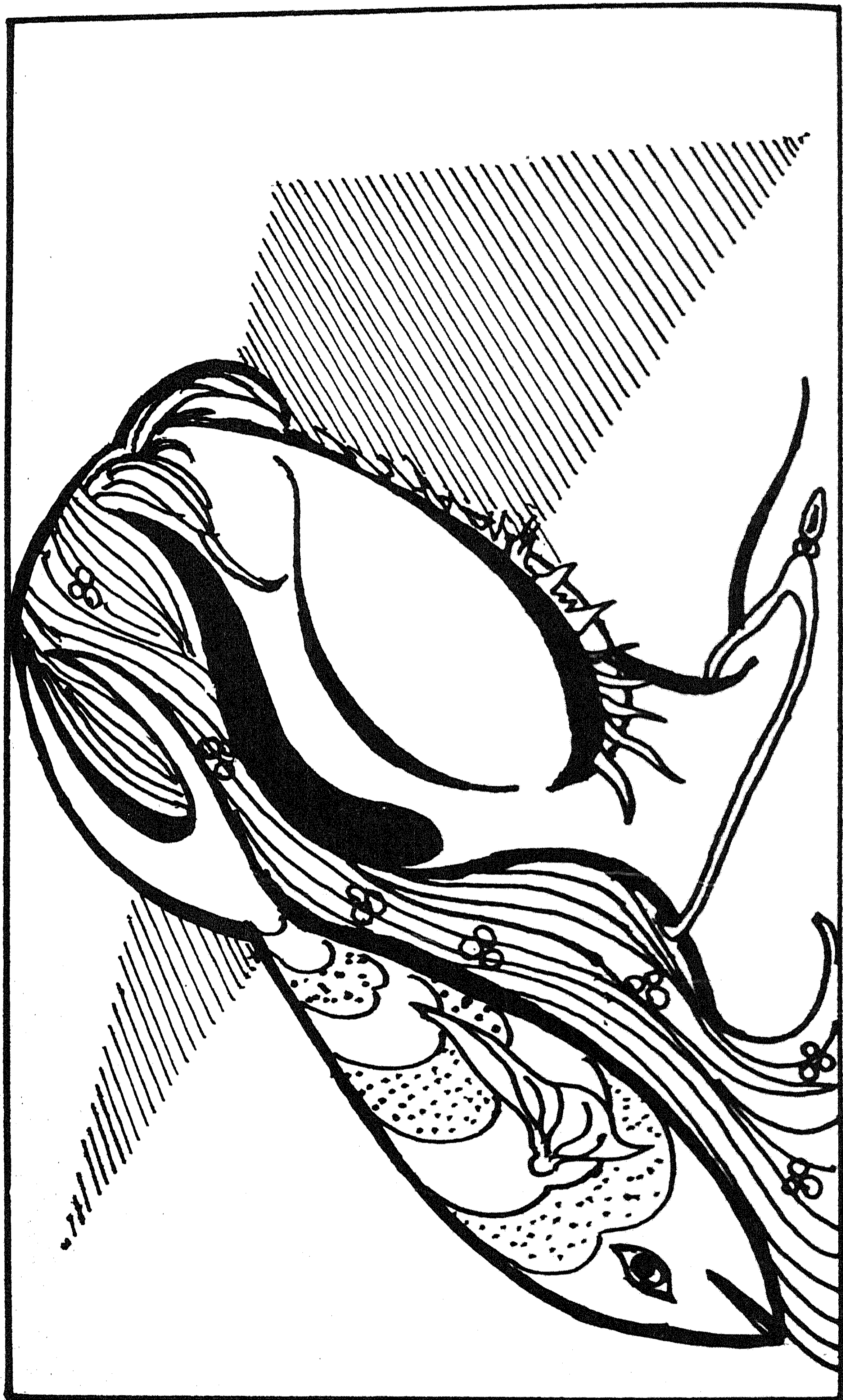
युगों के अन्तराल को मैंने,

अपने में समेटे देखा है,

वर्षों की सूनी पलकों को,

बार-बार काजल से सँवारा है।

सितारों से टँकी चुनरी से,

कितनी बार अपना आनन पोंछा है।

चन्द्रमा को देखकर,

कितनी बार, कितनी बार,

तुम्हें अपने पास आने का निमंत्रण दिया है।

मौत एक निर्यात है।

आधा गम आधी खुशी,
यह जीवन का अनुपात है।
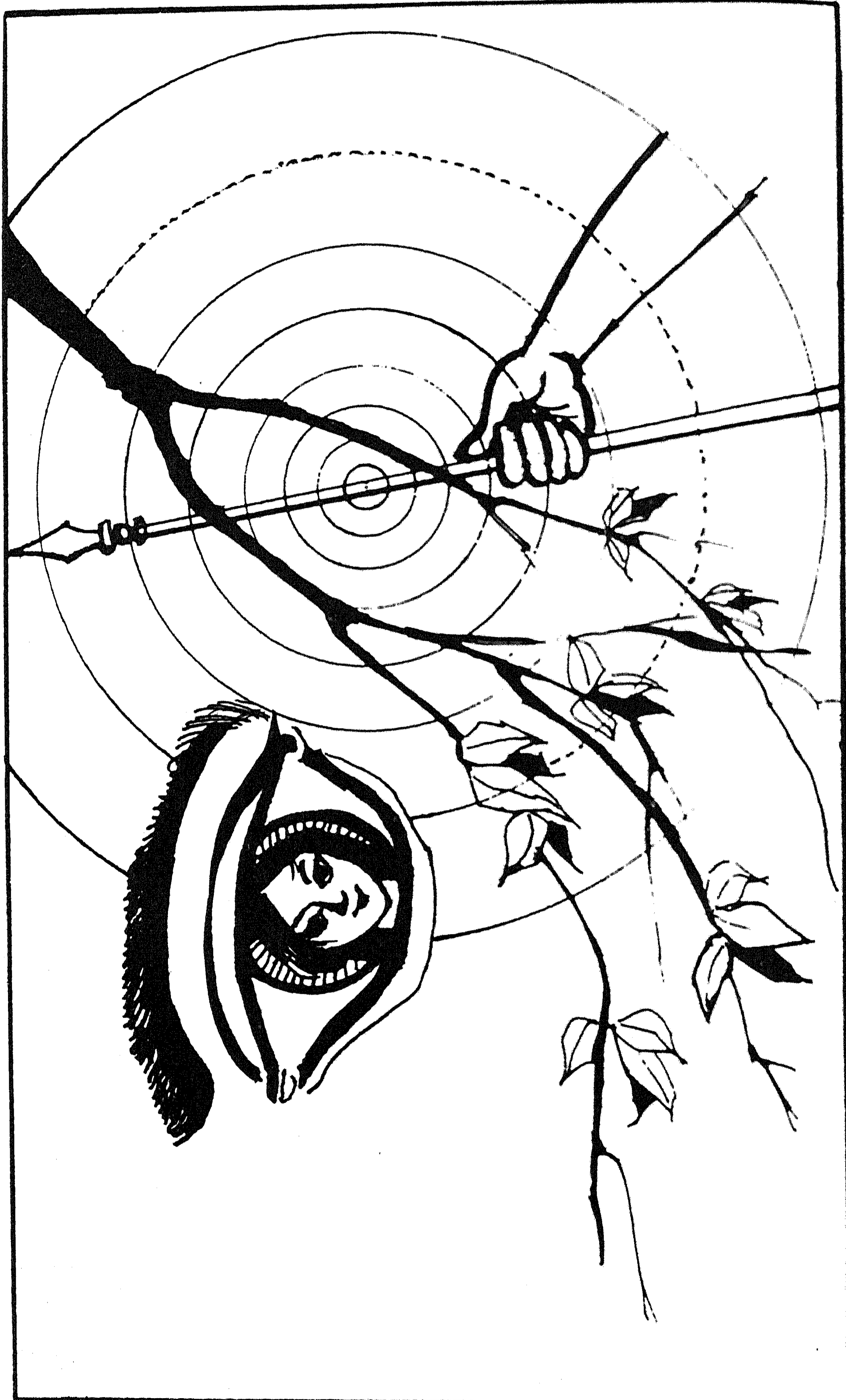
जन्म एक आयात था,
मौत एक निर्यात है।

आधा गम आधी खुशी,
यह जीवन का अनुपात है।

कौन कहता है मैं अब अकेली हूँ,
आज जिन्दगी दर्द की सहेली है।

तुम ही कह दो कसूर किसका,
कोई विधवा अगर नवेली है।

अपना विश्वास हो चला खंडहर,
आस्था ढ़हती सी हवेली है।

आदमी आदमी को समझे कैसे,
आदमी आदमी की पहेली है।

तेरे बगैर जी रहे हैं ऐसे,
जैसे रेखा बिना हथेली है।
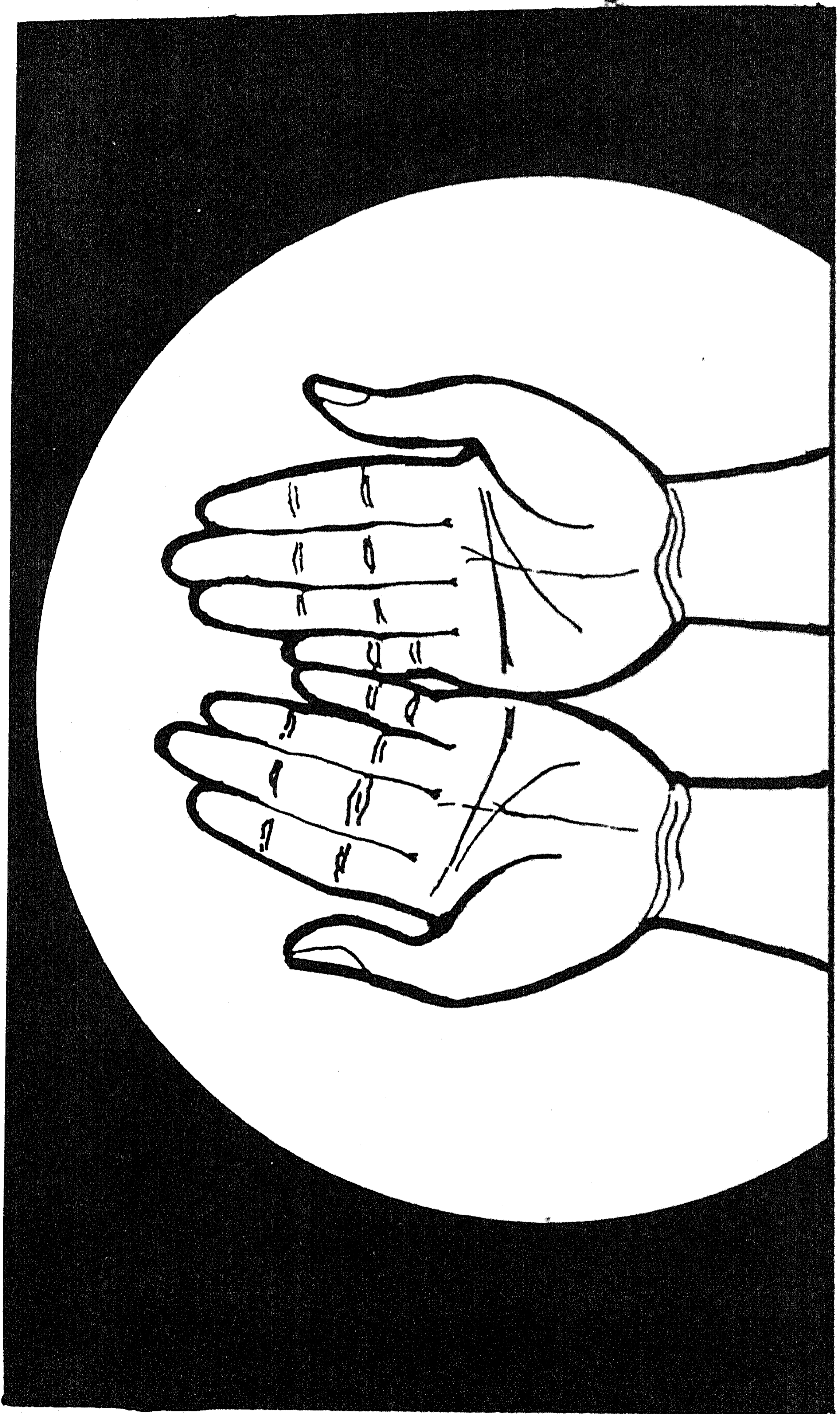
समझ में नहीं आता
किस, सुविधा की तलाश में
हथेली जुड़ी ही रह गई
किस, दुआ की तलाश में।

वेदना में विस्फोट हुआ
आसुँओं की आग से
द्वार निर्मेष से
पदचिन्ह शेष से
आँगन अब गूँजे नहीं
मुडेर वाले काग से।

दर्द गिरफ्तार हुए
स्वप्न सब फरार हुए
दिल का पता न चल सका
धड़कन के सुराग से।

अश्क बेरोजगार है
नियुक्ति पत्र अब तक न आया
खुशी के विभाग से
वेदना में विस्फोट हुआ
आसुँओं की आग से।
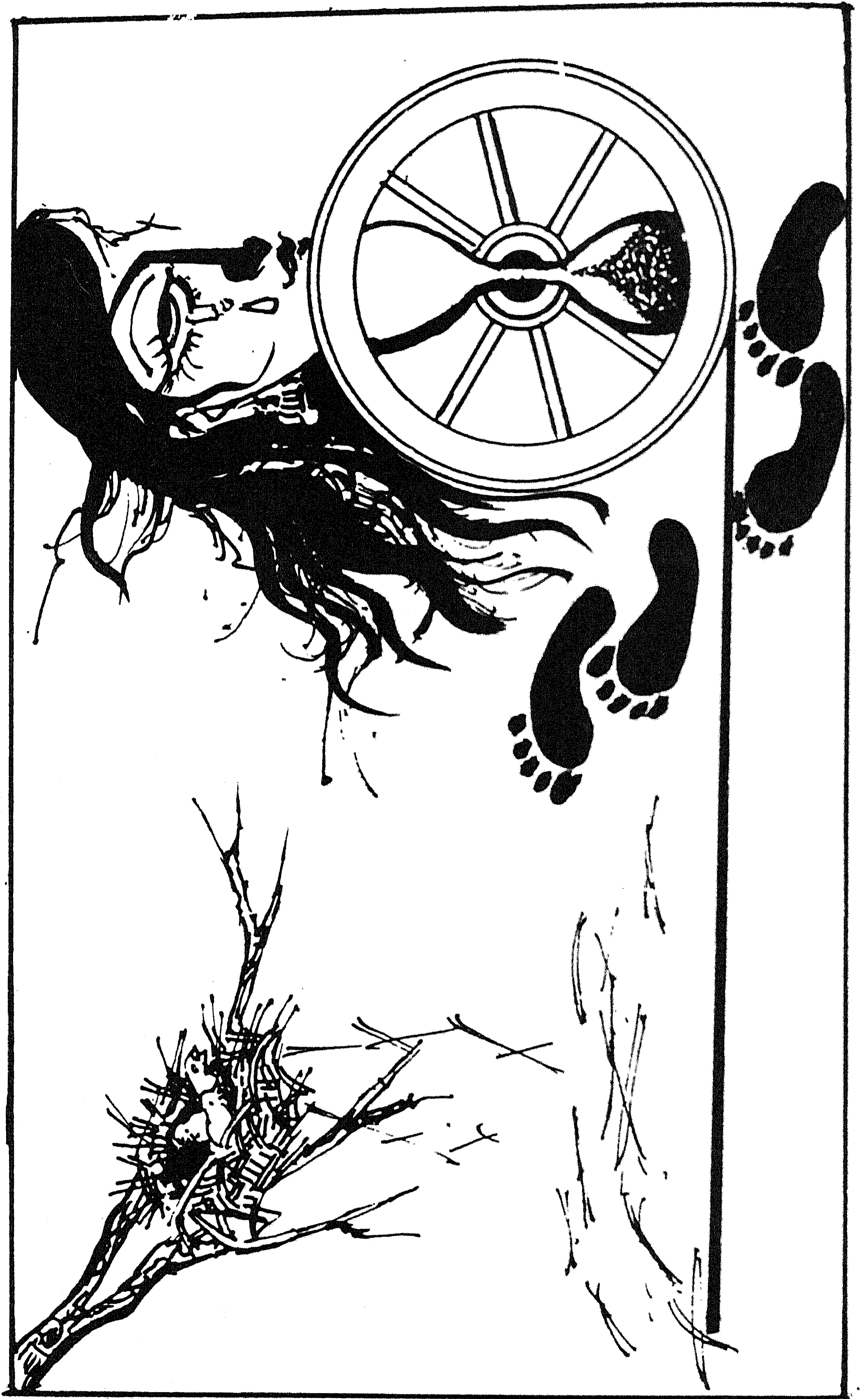
स्पर्श स्पर्श माँग उठता है
त्वचा त्वचा को बुलाती है
उम्र जब तुम्हारे पास आती है।
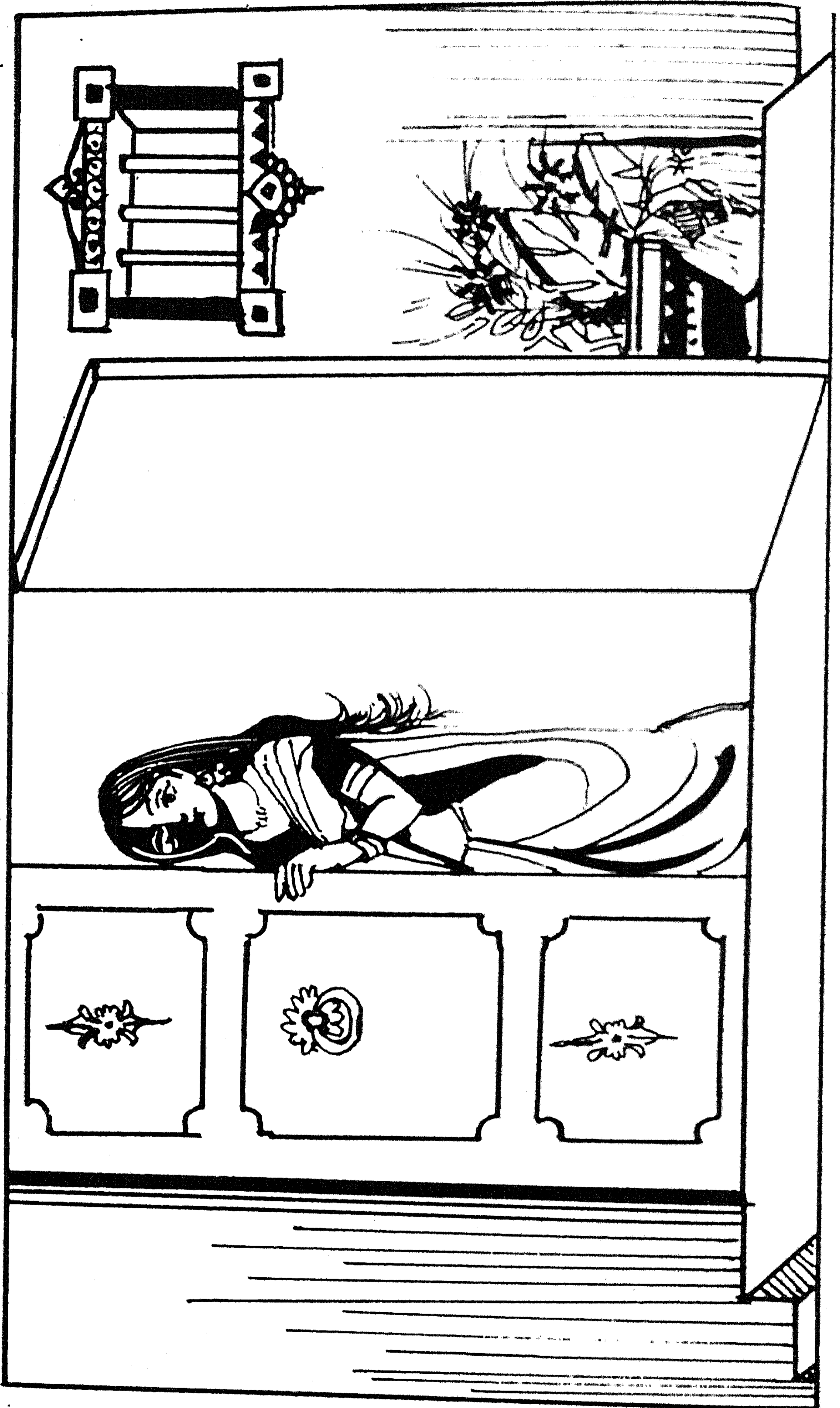
सारी उमर गुजर चली फैसलों के आस-पास
चल रहे हैं हम और तुम फासलों के साथ-साथ
चलते-चलते वक्त का,
पहिया अचानक रूक गया
अश्रुओं के कर्ज में
सारा ही जीवन चूक गया
चन्द तिनके बस शेष हैं,
जीर्ण-नीड़ों के आस-पास।

उदासी के कोहरे में लिपटे हुए,
मैंने देखा है,
मौत को लेटे हुए।
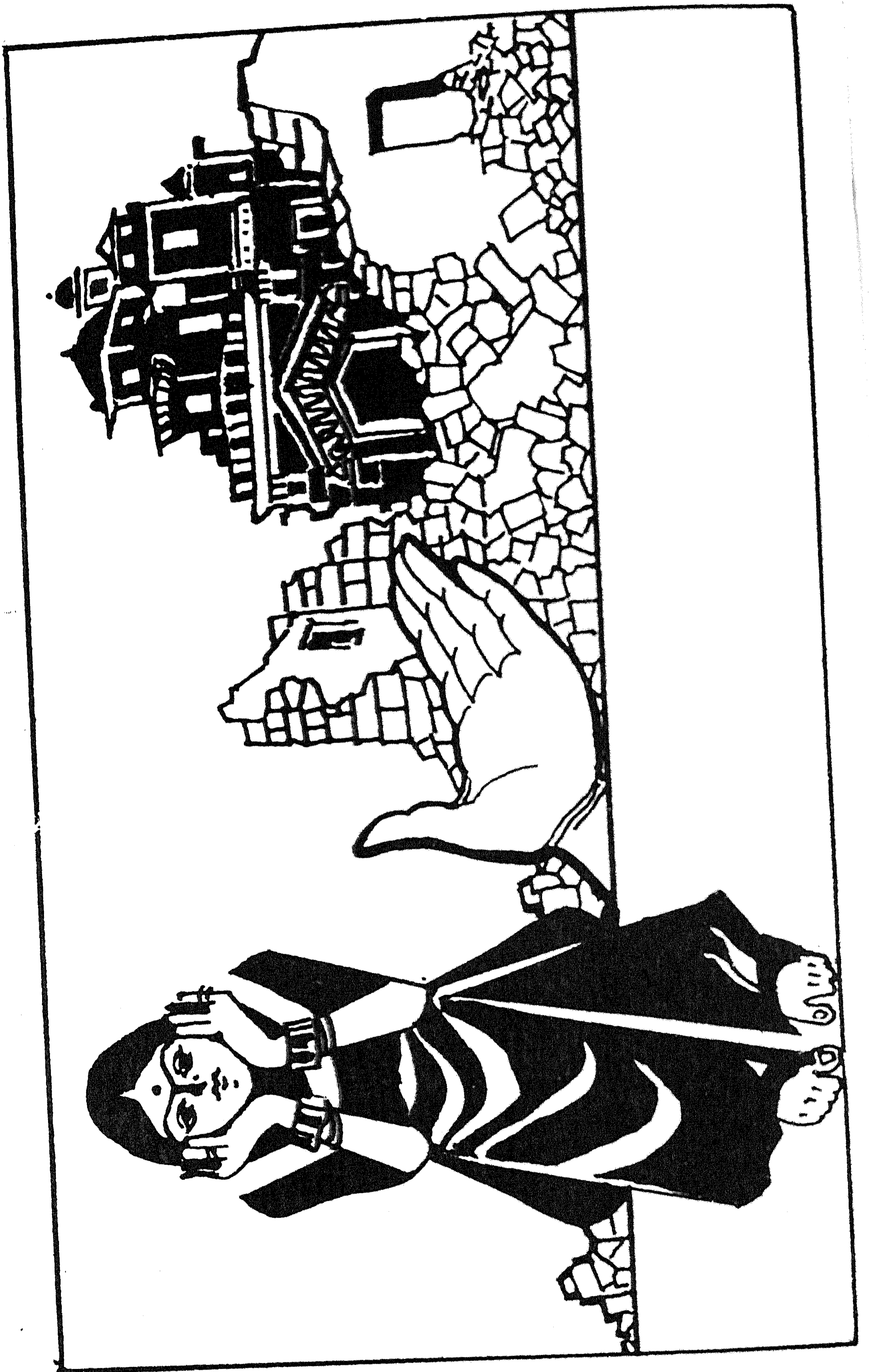
दर्द कोई शब्द नहीं
न कोई पीड़ा
न मात्र अहसास

दर्द कोई गत नहीं
न कोई सृष्टि-चक्र
न कोई सुखानुभव

दर्द कोई पराधिकार नहीं
न दर्प
न स्वतः सृजित अनुभव

बस
दर्द सिर्फ तेरी याद है
जो है हर पल
पल पल मेरे साथ

शायद इसीलिए
मैं ही प्रतिपूर्ति हूँ,
दर्द का अनुभव संसार हूँ।

घर के चार दरवाजे हैं,
शायद,
मैं उन्हें खोलना भूल गई थी,
एक प्यार था
एक कर्तव्य था
एक त्याग था
मुझे जब खोलने की याद आई
तब मैंने देखा
मैं,
त्याग के सामने खड़ी थी।
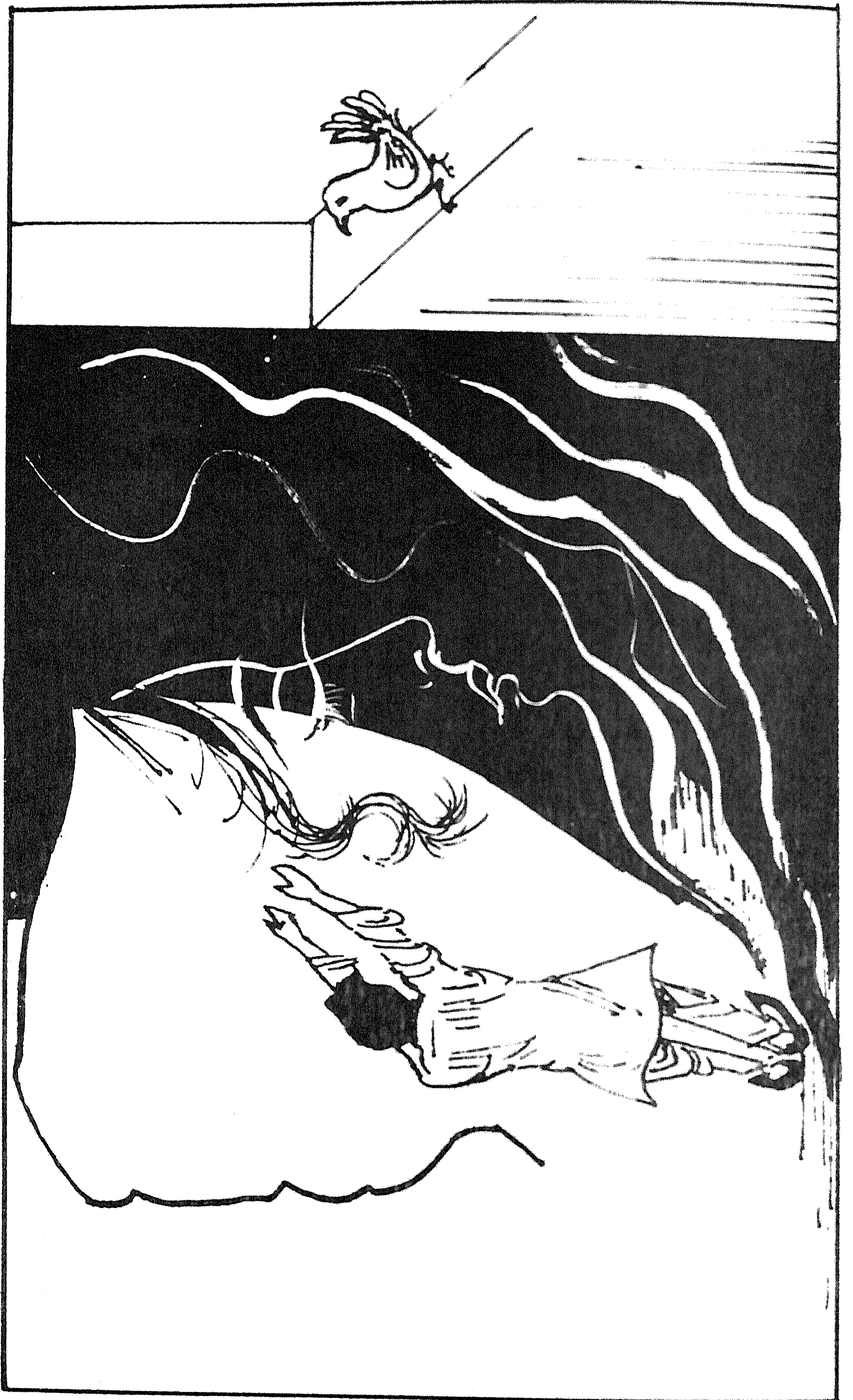
मौत बनेगी विधवा
जिस दिन मैं मर जाऊँगी

जिन्दगी न हो मायूस
जन्म और मृत्यु के अन्तराल में
कुछ न कुछ तेरे लिए कर जाऊँगी।
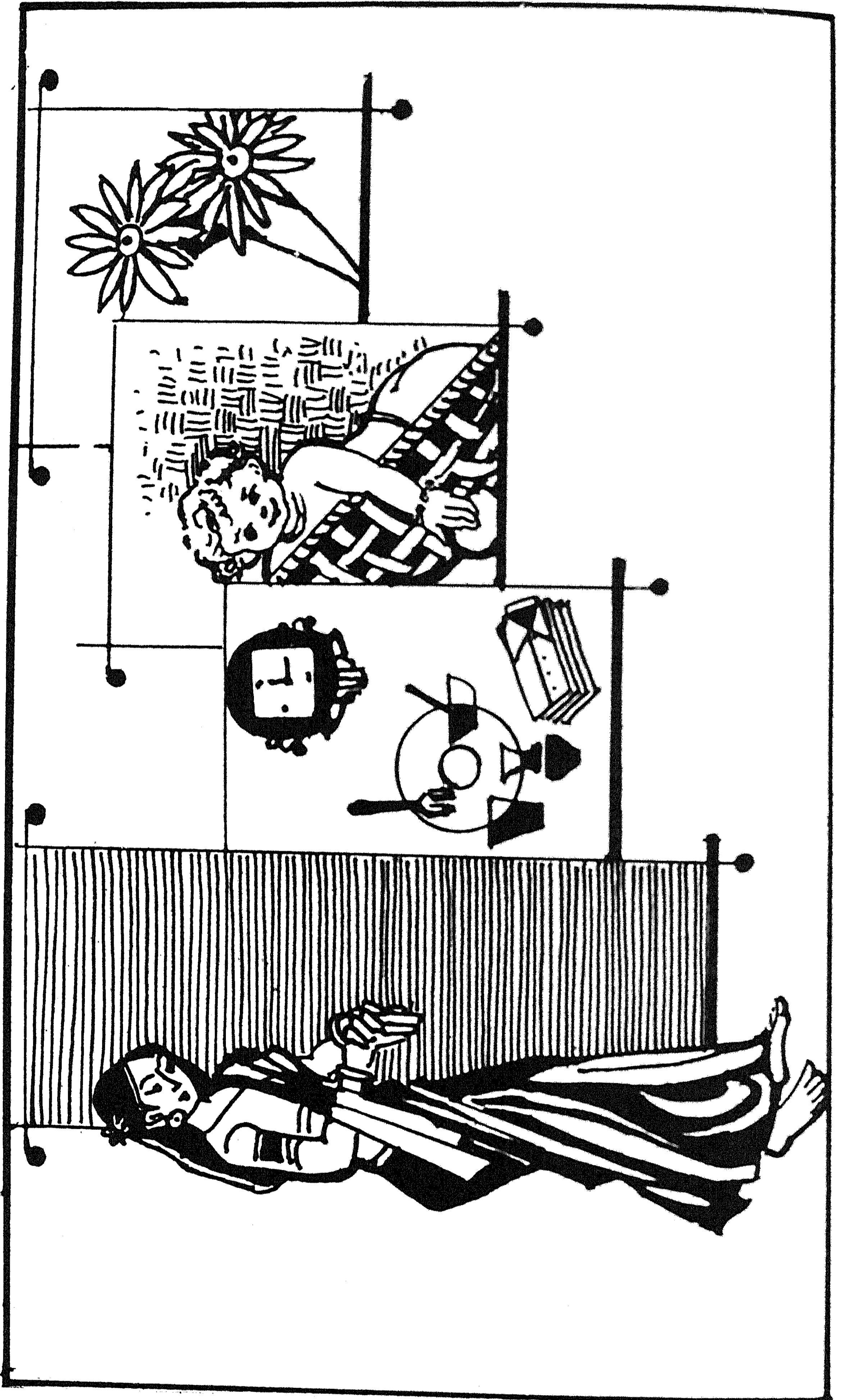
गीत अब दिल को मेरे बहला नहीं पाते
थक गये हैं, गम,
वे किसी को भी रुला नहीं पाते
चाँदनी की बात तो कुछ और है वरना,
तन को अँगारे,
अन्धेरों के जला भी नही पाते
मर गई कोशिश,
मना कर आखिरी कोशिश
बस ताज्जुब,
है तो इतना, कि,
आपको क्यों भूला नहीं पाते।
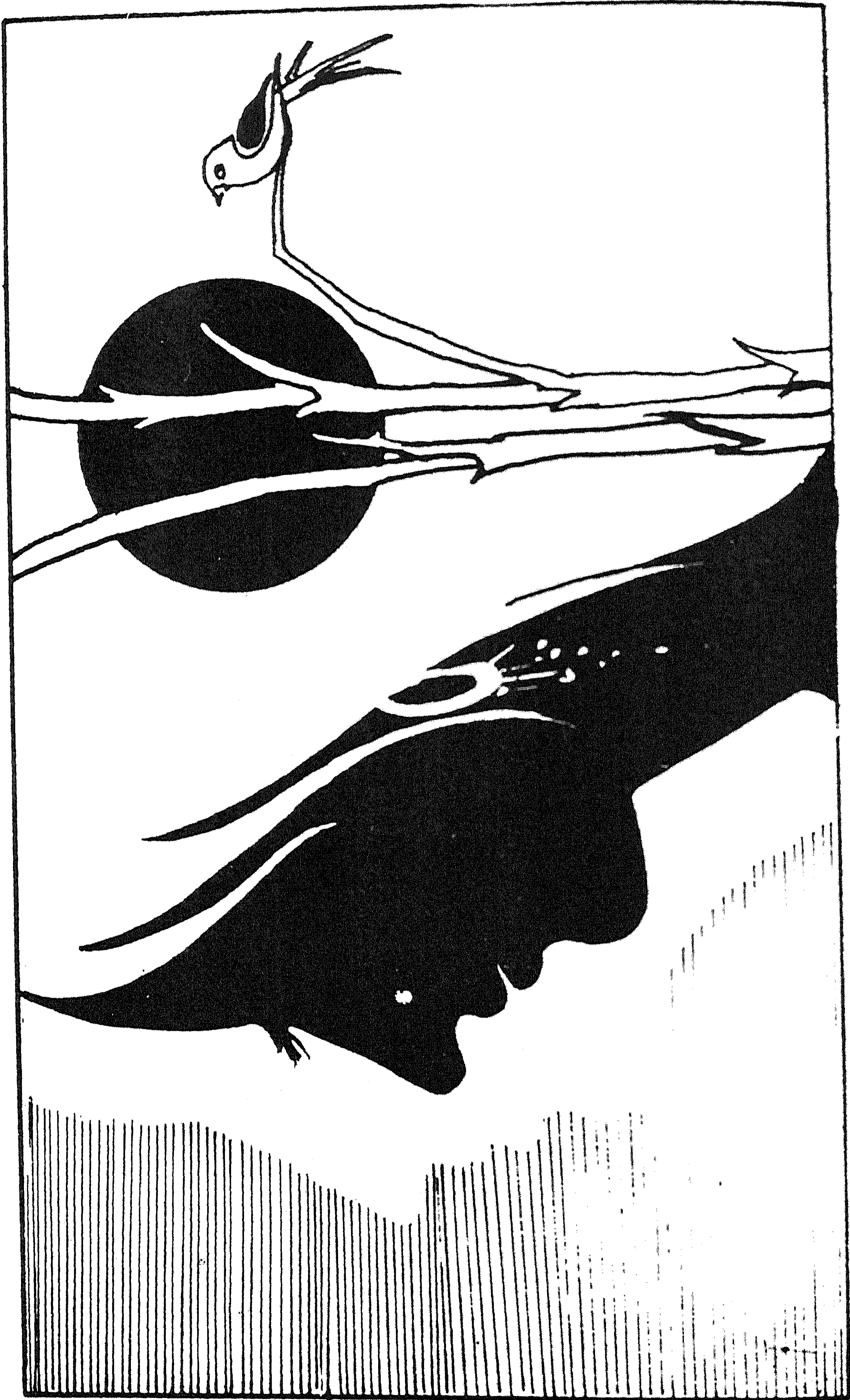
हो गई हूँ पाहन मैं जड़ी भूत है, पीड़ा
कम्पित है गान सभी,
और ,
बह गये शेष हास
आसुँओं की धारा में।

लम्हा लम्हा,
मैंने याद करने में बिताया,
मोहरम के दिन पीर पैगंबर
क्रिसमस के दिन क्राइस्ट को
ग्यारस के दिन राम को
पूर्णिमा के दिन रावण को।

कलयुग के सतयुग में गाँधी को
बुद्धि के प्राँगण में नेहरु को
निष्ठा के झरोखों में इन्दिरा को
आकाश की कल्पना में राजीव को।

मेरी याद में अब कोई दिन
या, लम्हा शेष नहीं
जब मुझे मेरी याद आए
दे दूँ जिसको कोई संज्ञा।

विरह अग्नि है
साँस पवन
और रुई सदृश यह काया

अश्रु बहाते नेत्र निरन्तर
इसीलिए तो

दग्ध नहीं होती है देह
विरहाग्नि की लौ से।

मैली चादर,
मैला तकिया,
बिस्तर भी कुछ धुँधला
बदरंग स्वेटर
बदरंग लुँगी
यौवन भी था बस उखड़ा उखड़ा।
हिलती डुलती साँसे
ठंडी-ठंडी आहें
कुछ चिप-चिप
कुछ लिप-लिप
बस यही था एहसास।
एक भ्रम था पुरुष होने का
एक भ्रम था ज्ञानी होने का
एक भ्रम था होनहार खिलाड़ी का
सच,
सब कुछ भ्रम ही भ्रम था।

एक-एक करके,
उम्र का,
हर पल पिघल गया
बस,
दिल के
टुकड़े,
गिन लिए
और,
दिल बहल गया।

तुमसे सीखा विश्वास मैंने,
बाँहों ने दिया सहारा,
भारत की सुन्दर भूमि पर
लगा कि कोई
सुनहरी-तारा जागा।
प्रकृति ने मूँदी आँखें
तुमसे अधर टकराए
एक कम्पन से कोंपल फूटी
एक नए तारे की सिसकी छूटी
लगा कि,
भारत की भूमि पर पुनः व्यास पधारे।
पर हाय दुर्भाग्य
इस सुनहरी तारे मे
व्यास का सिर भन्नाया
क्रोध अहिंसा और अभिमान को
आकर उसने झट अपने गले लगाया।
लगा कि,
भारत की सुन्दर भूमि पर
क्या?
पुनः
कोई!
दुष्ट पधारा?
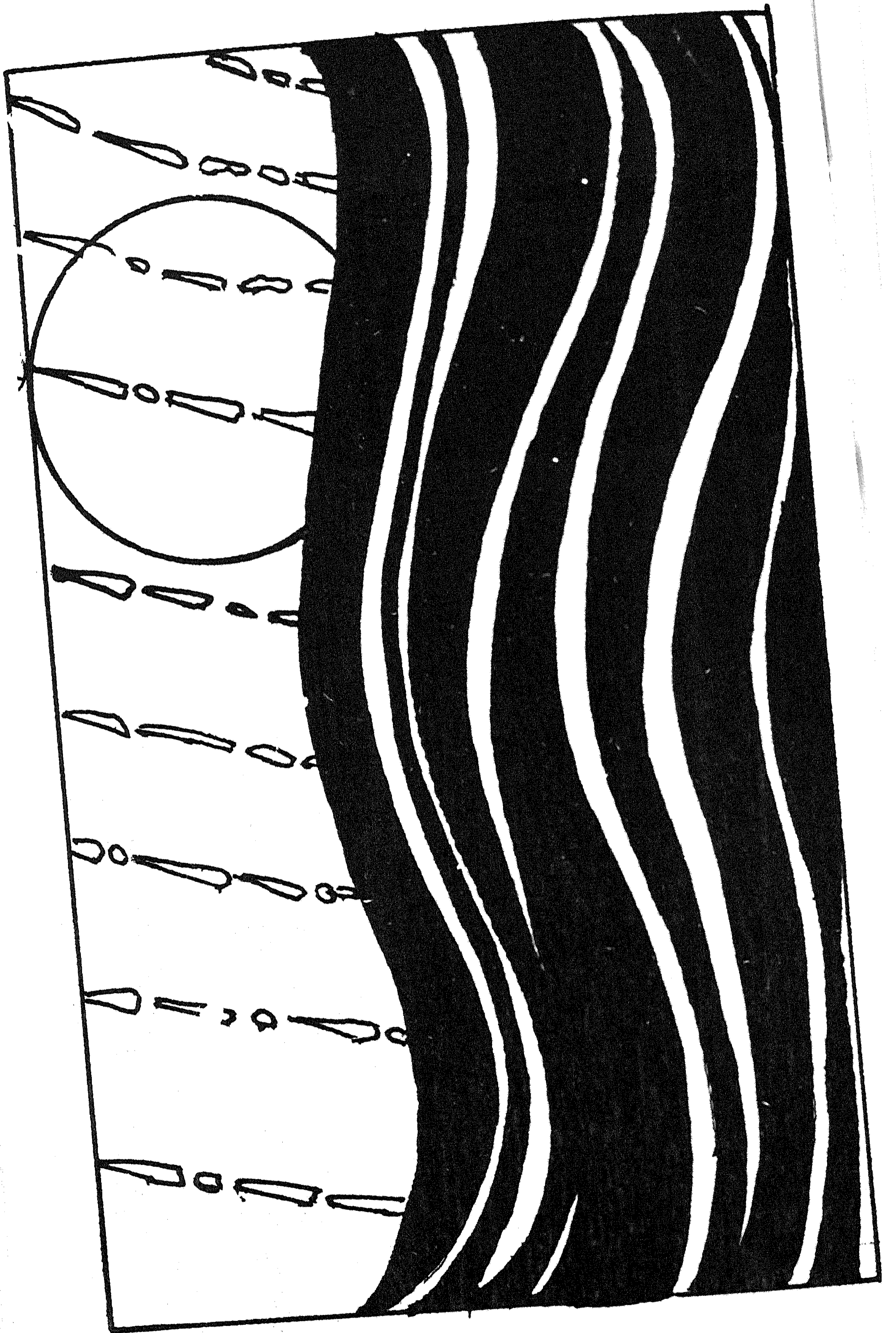
दिल जब भर जाता है
और,
सान्तवना बरस जाती है,
कच्चे बाँध सा
फूटते देखा है, तब मैने आदमी को।

मन है आवरण एक

अन्दर सतबली अनेक

जो न देखी जाती है

न सुनी जाती है

न छुई जाती है।

और!

ईश्वर तुम हो कल्पना एक

जिसके रुप अनेक

जो न देखे जाते हैं

न दिखाए जाते हैं

न छुए जाते हैं।

फर्क सिर्फ इतना ही है।

मन है अन्दर तन के

ईश्वर है बाहर तन के!

यह अन्दर बाहर का खेल

मिटाता है जीवन का खेल।
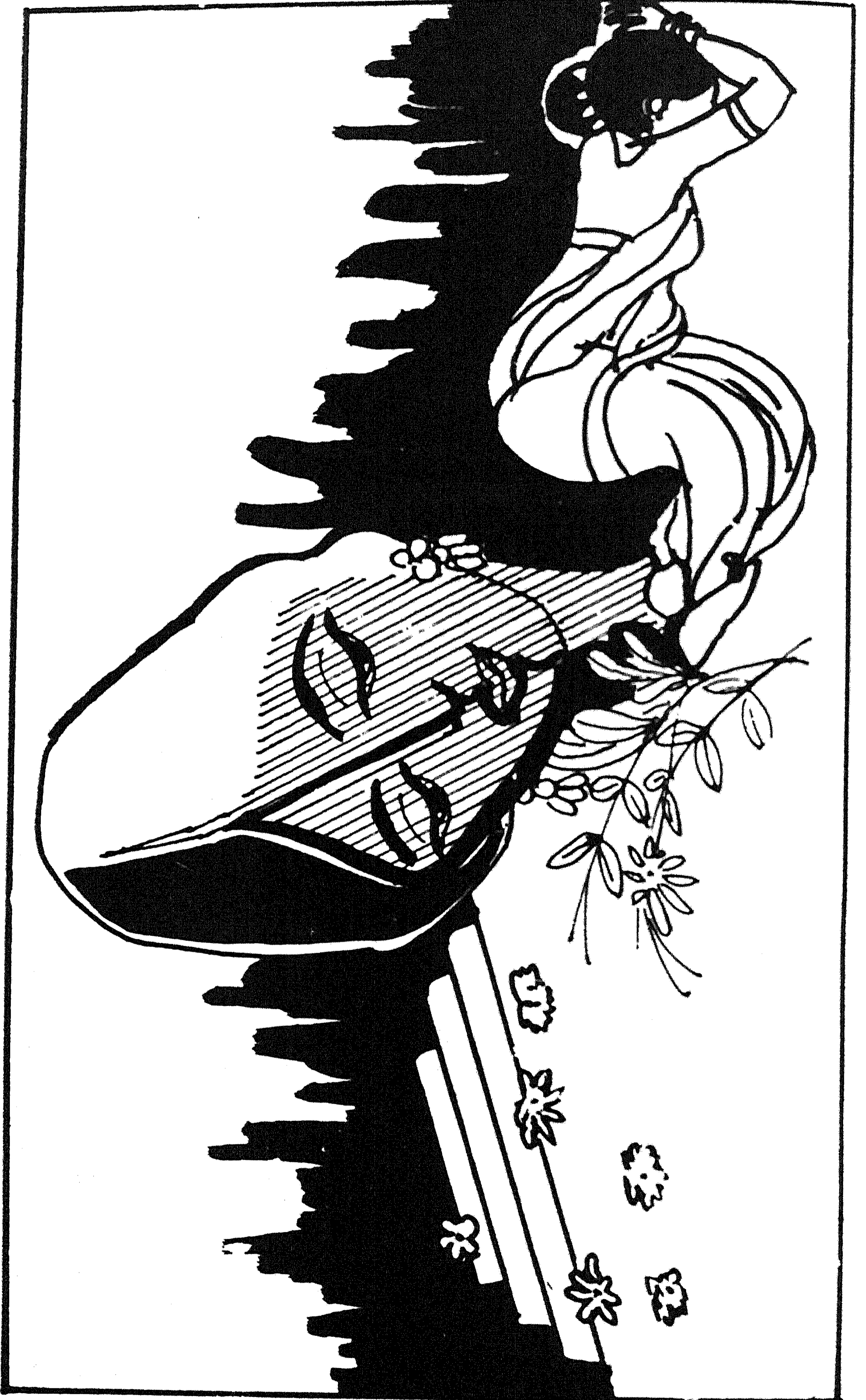
तुम असूलों के नगर में आओगे
जिन्दगी की आरजू बन जाओगे।
जुस्तजू में हम खड़े कब से तेरी
सवालों से कैसे टकरा पाओगे।

तुझे मीत कहूँ या दुश्मन
तुझे गैर कहूँ या अपना
तेरा ख्याल बड़ा दर्दीला है
तेरा स्वप्न बड़ा गरिमामय है
आ के देख,
तुझ बिन बाती सी जलती हूँ
यह,
प्यार नहीं,
यह
मोह नहीं,
यह जाल नहीं,
यह,
भ्रम नहीं,
बस तू मेरा कोई अपना है,
इस,
ख्याल में
निश दिन डूबी रहती हूँ
पाने की कुछ चाह नही
लेने की कुछ आस नहीं
बस!
जीवन के कुछ क्षण साथ चलूँ
हाँ, इस स्मृति में
प्रतिदिन!
डूबी रहती हूँ।
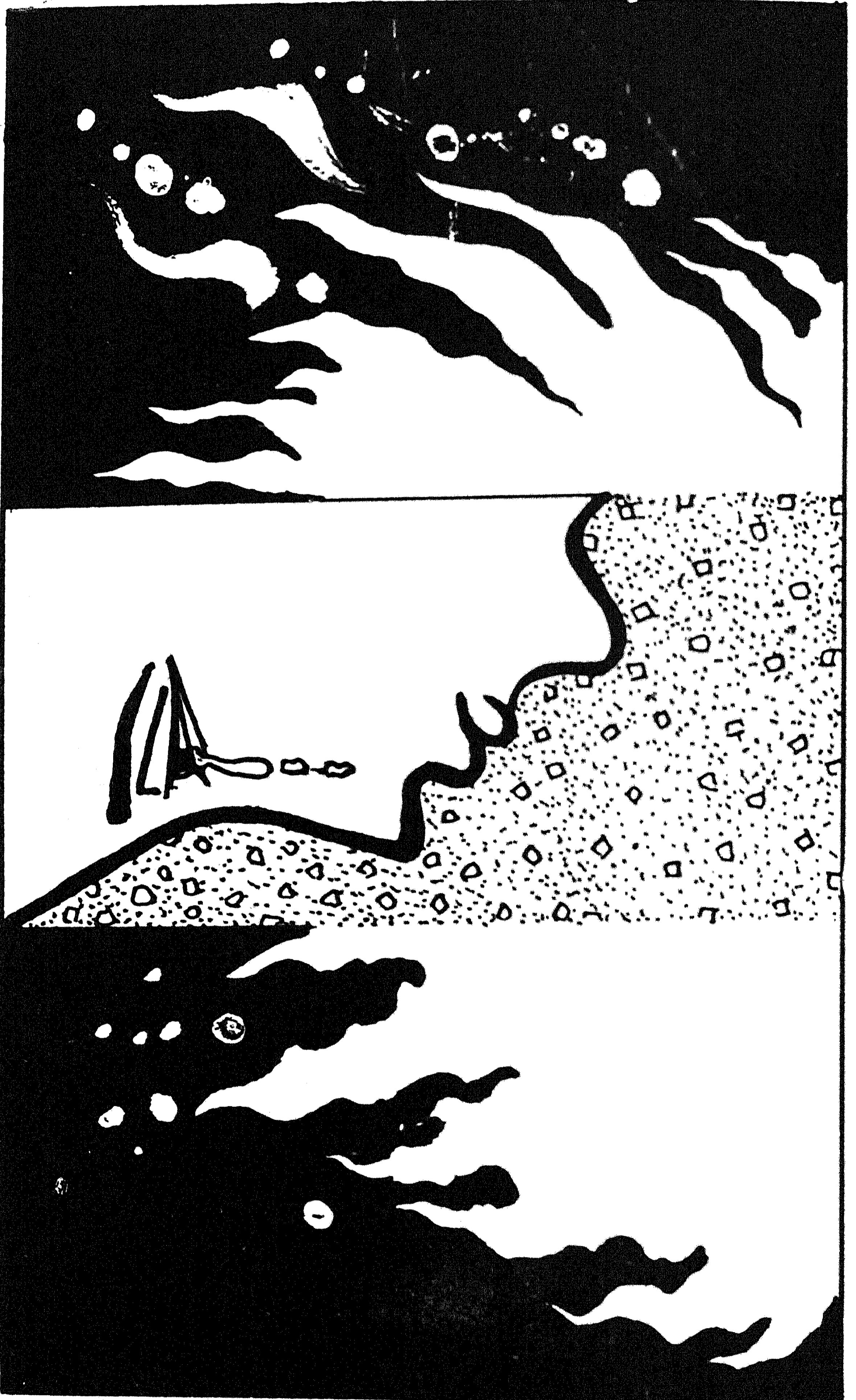
मैंने तुमसे,
कुछ . . . . . .,
बूँदें माँगी थीं,
सागर,
नहीं।
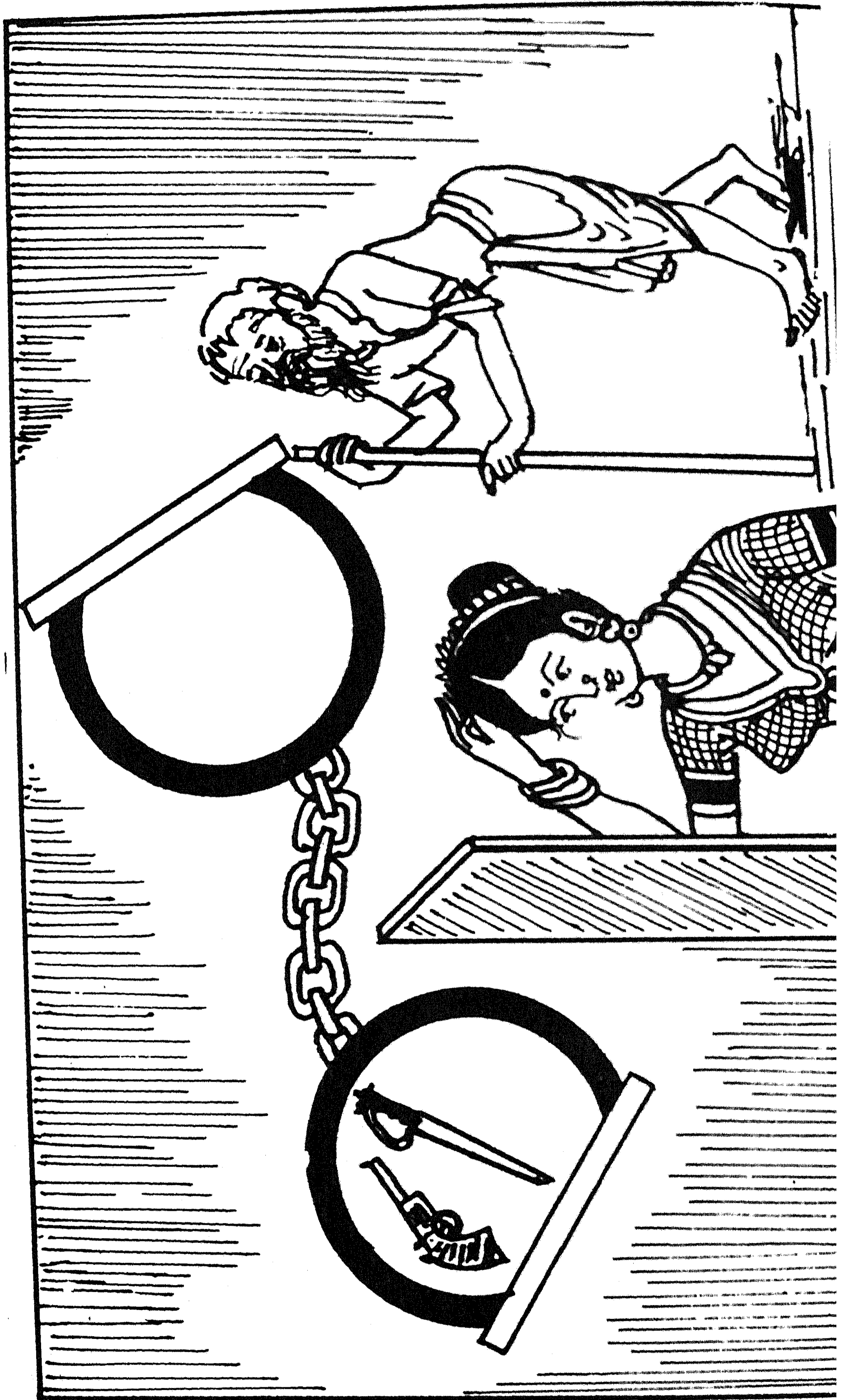
दर्द इतना बढ़ा,
कि,
जुबाँ बेजबाँ हो गई
समन्दर की कल्पनाएँ
खार-खार हो गई।

दर्द इतना बढ़ा कि
जिन्दगी लाश बनकर रह गई
देखने वाले सभी
कयामत बन कर छा गई।

दर्द इतना बढ़ा कि
इँसां बुत बनकर रह गया
रोटी कपड़ा होते हुए भी
भूखा नंगा सो गया।

सजा की तलाश में
कसूर बूढ़ा हो गया।
माँग की प्रतीक्षा में
सिन्दूर विवर्ण हो गया।

आज,
चौराहे पर
मैं इन्सान को खोज रही थी
सब से मैंने उसका पता पूछा
कोई मुझे सही रास्ता दिखा न सका
उसी क्षण,
हाकर्स जोर से चिल्लाए,
शाम की ताजा खबर
मानेक चौक में,
दो को,
छुरा घोंप दिया
मुझे,
इस सदी के इन्सान का पता
इतनी सहजता से मिल गया।
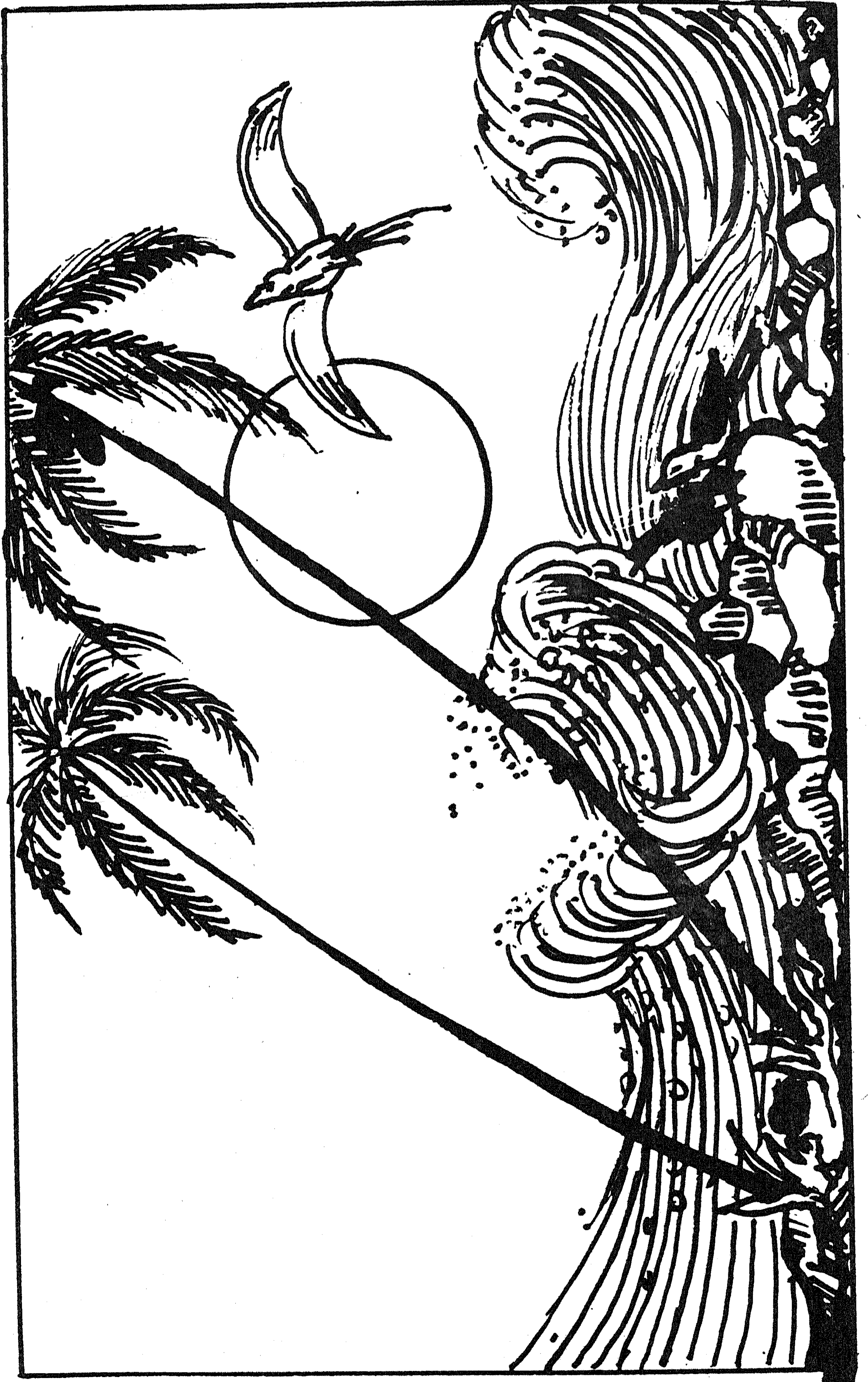
फूल,
मुस्करा दिया
मनुष्य से दिया
फूल के पास वहशीपन नहीं था,
और,
मनुष्य के पास कोमलता नहीं थी।

मन,
किसी ने कहा,
अहम से बड़ी विनम्रता नहीं है
य़ह कहना ही अपने में एक अहम् नहीं है?
मैं तो सागर की भाँति
उबल रही हूँ
कि,
एक बार तो तुम पूछते
कि तुम,
आकाश में क्यों नहीं उड़ रहीं
पंखी के पर
चिड़िया की चोंच
इन के बीच क्या मैं नहीं?
मन !

पीड़ा जब भावुकता से टकराती है,
इन्सान की सच्ची सूरत पहचानी जाती है।
शब्दों के खम्भ धराशायी हो जाते हैं
वादो,
के जंगल में,
असहायता के पौधे लहलहाते हैं,
मन आँख मिचौनी करता है
आत्मा जार-जार चिल्लाती है।

मेरी यह जुस्तजू है,
कि,
एक बार मुझे
मेरे दोस्त,
ऐसे ही स्वीकार कर लो जैसी मैं हूँ
न, नहीं है यह मेरा अहम्
न ना ही न हठ
कांक्षा है उस
पौरुष पूर्ण बड़प्पन की।
जिसके साये में, मैं जीवित रहना चाहती हूँ।

दिल तेरी याद में
इतना न घबड़ा जाऊँ मैं
कि तन्हाईयों का खास जहर
तन-मन में समेट लूँ कहीं !

तेरी दीवारें फीकी हैं
कौन जाने,
कोई उदास रो तो नहीं रहा,
उनमें?
चादरों पर पड़ी सिलवटें
तेरी नाइन्साफी की दास्तान है!
सुन!
देख!
कोई दर्द कहरा तो नहीं रहा उनमें।

मनुष्य को जीते मैंने देखा है
मनुष्य को हँसते मैंने देखा है,
सच
हाँ !
अगर तुम्हें यकीन नहीं आता,
तो मेरे दोस्त,
मुझसे एक बार प्यार करके देखो।

धड़कन को सरगम का नाम दो
घुटन को,
बेबसी का आयाम दो
ऐ मेरे दोस्त
कब्र को बुत का नाम न दो।

चाहत को मोहब्बत का पैगाम दो
फर्ज को अपनी मौत का फरमान दो
पर ऐ मेरे दोस्त
जिन्दगी को बेरूखी का नाम न दो।

जहर को मयखाने की झंकार दो
शराब को हुसन ए जमाल दो
पर ऐ मेरे दोस्त
प्यार को मौत का सामान न दो।
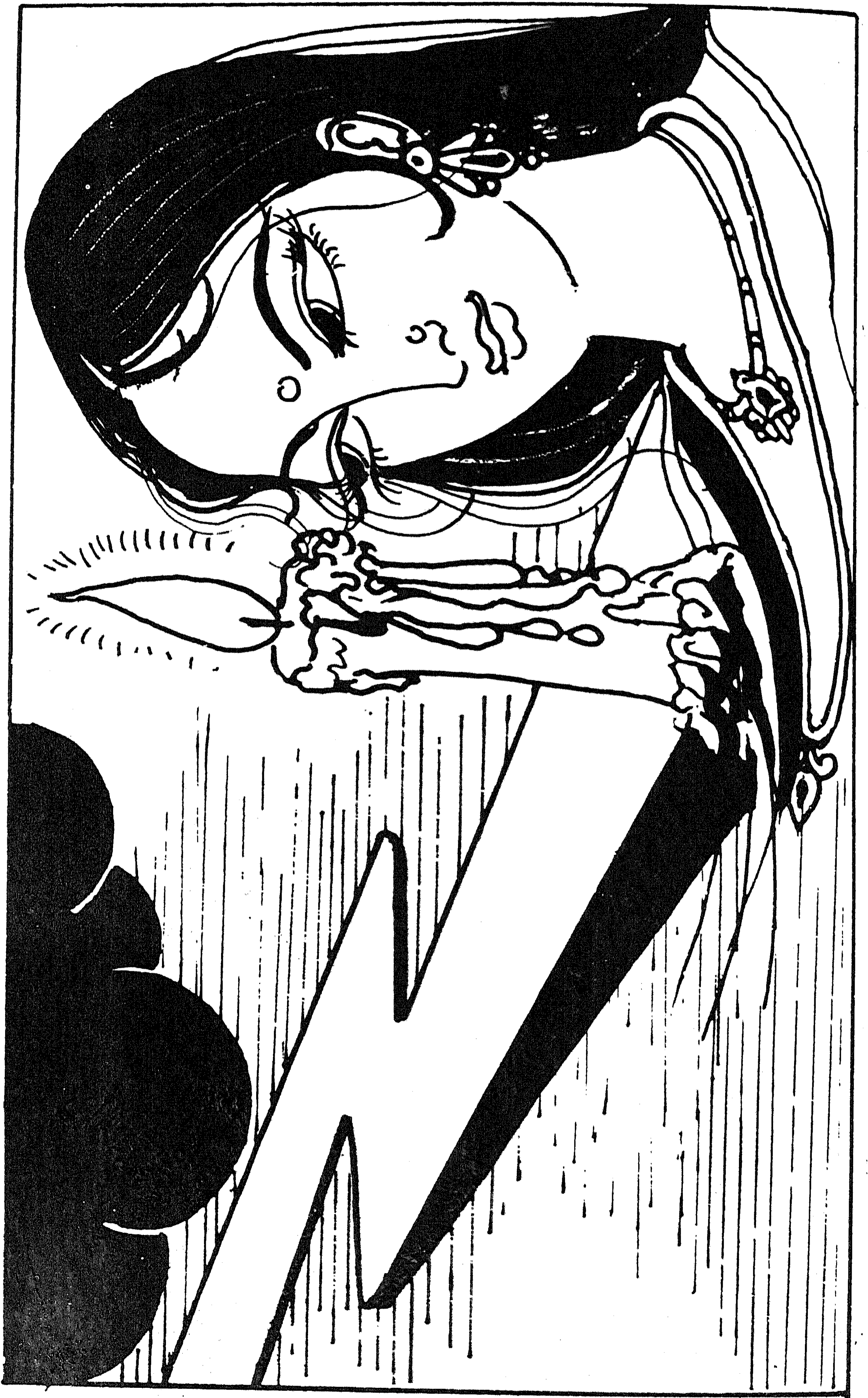
कौन जाने हमने-
कब कहाँ?
तेरी रूह देखी,
तेरा अक्स देखा
लेकिन,
गाफिल थे हम,
जब एहसास के सायों में
तुझको देखा।
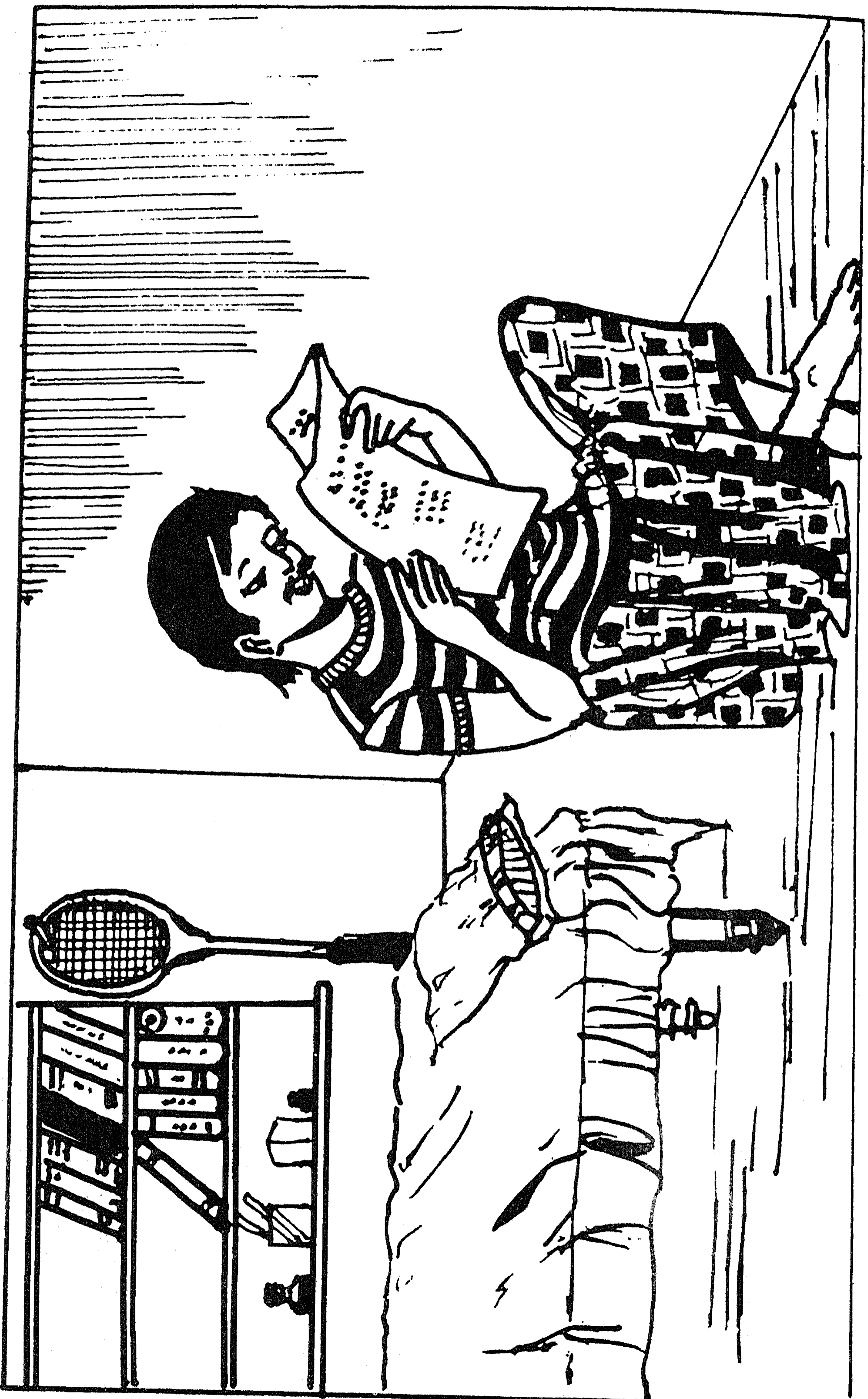
यह जीवन स्वप्नों की एक गड्डी है,
गड्डी में ढ़ेर सारे स्वप्न हैं. . . . .
जिन्हें रिश्तों का नाम दिग्ग गया है,
माँ, भाई, बहिन, पिता, पति, दोस्त . . . . .,
मैं महत्त्वहीन सी देखती रहती हूँ
मेरा नम्बर भी आएगा,
लेकिन कभी नहीं आता,
शायद कभी नहीं आएगा
खेल प्रारम्भ होने से पूर्व ही मैं हार जाती हूँ
लगता नहीं,
विश्वास हो गया,
मेरा जीवन मात्र स्वप्न की गड्डी है
चलो सो जाओ
शायद फिर से एक नया स्वप्न,
नई गड्डी बँटे,
और
अपना भी नाम जुड़ जाए,
किसी रिश्ते के साथ सपनों में ही।

किस को फुरसत है
जो मेरे नगमे सुने,
मेरे पास मात्र एहसास है
कि,
मैं दे सकती हूँ
मुझे भी कुछ चाहिए
यह न किसी को मालूम है
और,
न
किसी को जानने की फुरसत।
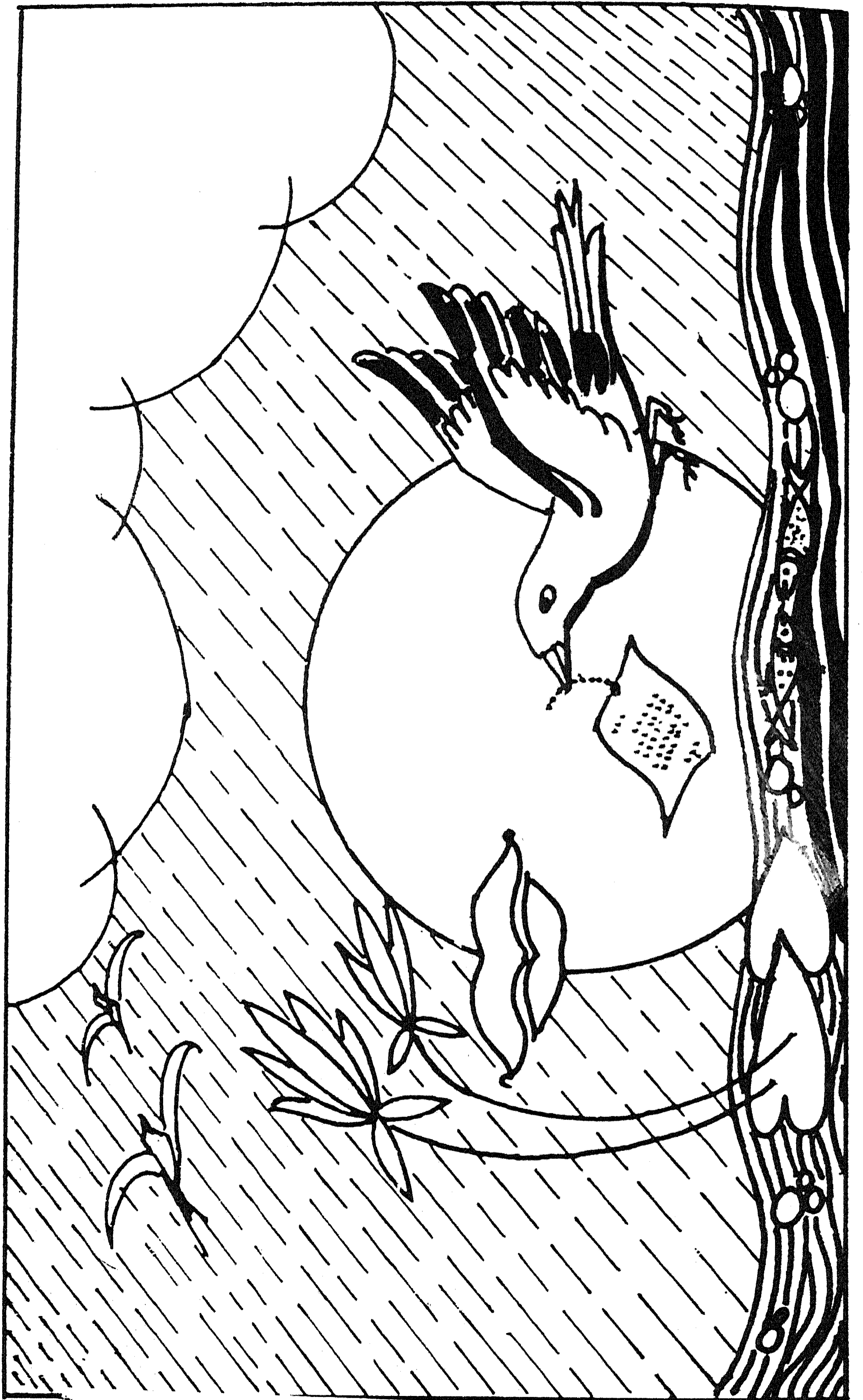
तुम आ रहे हो, आओगे शायद
इक वहम है और खामोशी
जानती हूँ
फिर भी पल प्रतिपल तुम्हारी ही प्रतीक्षा है
और करती रहूँगी,
यही सच्चाई है।
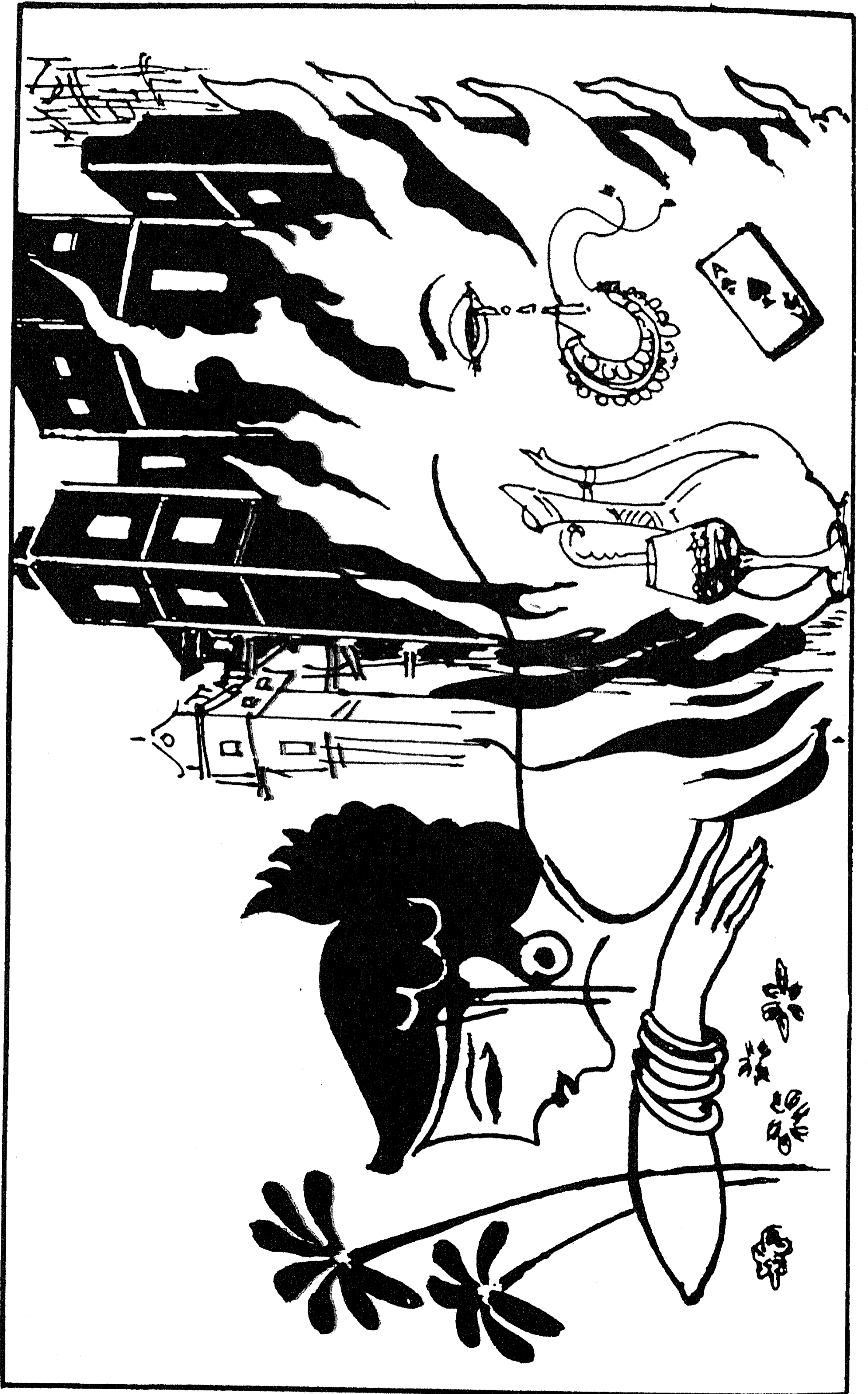
प्यार ममत्व है?
प्यार अपनत्व है?
अधिकार है?
या केवल माँग है?
विवशता है?
या कि,
प्यार वासना है?
नहीं,
कुछ भी नहीं,
प्यार,
वह तो
बस प्यार है।

कल मुझसे बात की थी फूलों ने,
गुलदस्ते में सजा लो खुशियों को
गुलदस्ते खरीदने मैं बाजार में निकली
पर सारा शहर वहशीपन में जल रहा था।
किस भाषा में समझाऊँ अब फूलों को
अभी गुलदस्ते में सजने का समय नहीं।

कम से कम आओ कि
बहार का कोई कतरा
थिरके।
स्नेह के वट वृक्ष के नीचे
कोई
दिया तो जले,
रात के अँधेरे में झंझावत है,
बादलों की घुमड़ है।
आशा के सहारे
कोई कदम तो बढ़े
राह तो कटे।
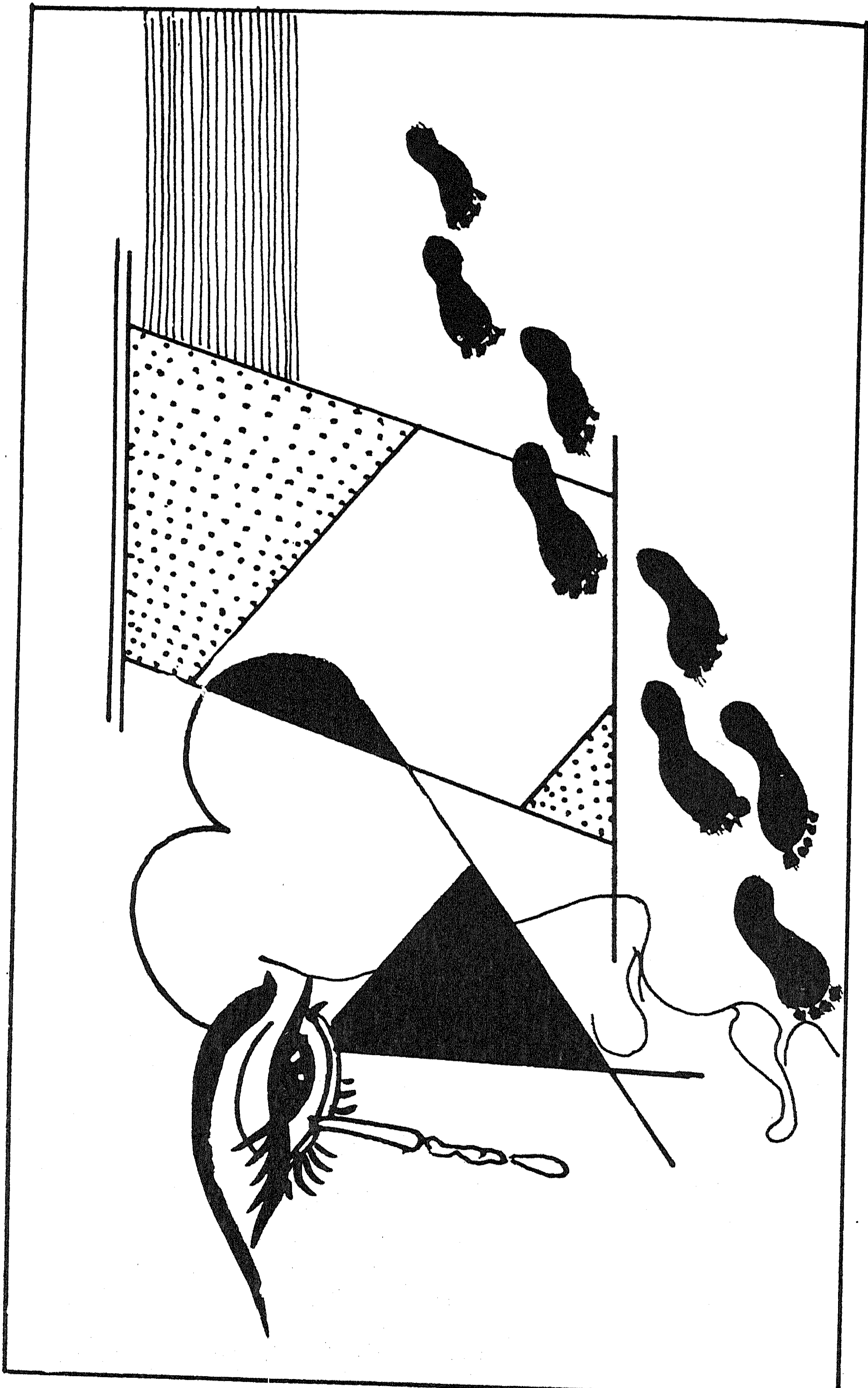
पल-पल क्षण-क्षण
देखी बाट तुम्हारी
बीते क्षण ढ़ल गये दिन,
तुम न आए द्वार हमारे।

नयनों को मैंने दिया बनाया
मन की उसमें बात जलाई
मेरे मन को तुम तक पहुँचाने की
कितनी मैंने विधी अपनाई।

कजरा गजरा बिन्दियाँ सब कुछ सूनी
उठती गिरती साँसे सूनी
थक गये शब्द रुक गई लिपि
साजन बिन मनुहार तुम्हारे।

करती तुम्हें सहस्त्र प्रणाम
तज के भव सागर के सारे सुख
माँग रही मुक्ति का विराम।

मन में भरा विषाद
कुछ-कुछ चिर-परिचित।
कुछ चिर अनजान
ओ चिर मौन।

क्यों रचा विरह
क्यों रचा प्रणय
क्यों रचा जन्म
जब पाना था निर्वाण।

तृष्णा के यह विविध प्रकार
न देते समुचित समाधान
है कोई वचनबद्ध आज
जो ढूँढ़ेगा महा प्रमाण।

उसे मेरा
शत शत प्रणाम।
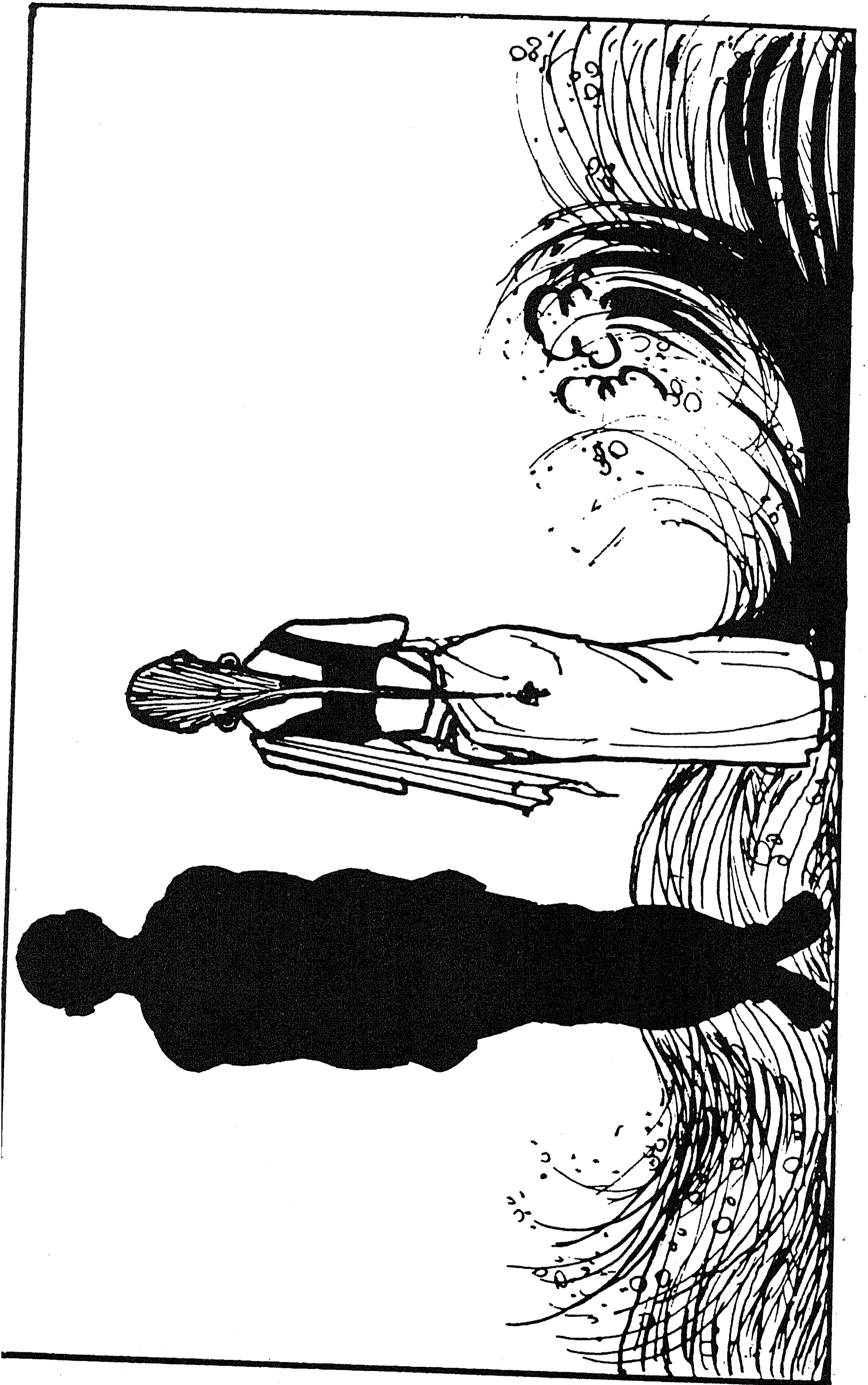
आँसूओं का कमी नही है
लेकिन रोने का मौका ही नही मिला।
बाँहों में अकुलाहट कम नहीं
सहारा लेने वाला ही नहीं मिला।
आवाज में फरियाद कम नहीं
चिल्लाने का वक्त ही नही मिला।
पैरों में पूरी दौड़ है भरी
लेकिन पीछा जिसका करूँ वही न मिला।
सीने की धड़कन बढ़ती गई
लेकिन अपनों का एहसास ही न मिला।
दिल में सब कुछ है, कुछ कम नहीं
लेकिन प्यार का निशान ही न मिला।
बस जी रही हूँ हर वक्त तलाश में
क्योंकि आज तक मरने का बहाना न मिला।

जिन्दगी तूँ इस कदर हमसे नाराज है
इसमें छिपा कोई न कोई राज है
अरमान आशा,
सब बेवक्त की बकवास है
बे जुबाँ दिल है
न साज है न आवाज है
मात्र,
दर्द बढ़कर नासूर बन गए,
न फूल हम सफर हैं
न जख्म हम राज हैं।
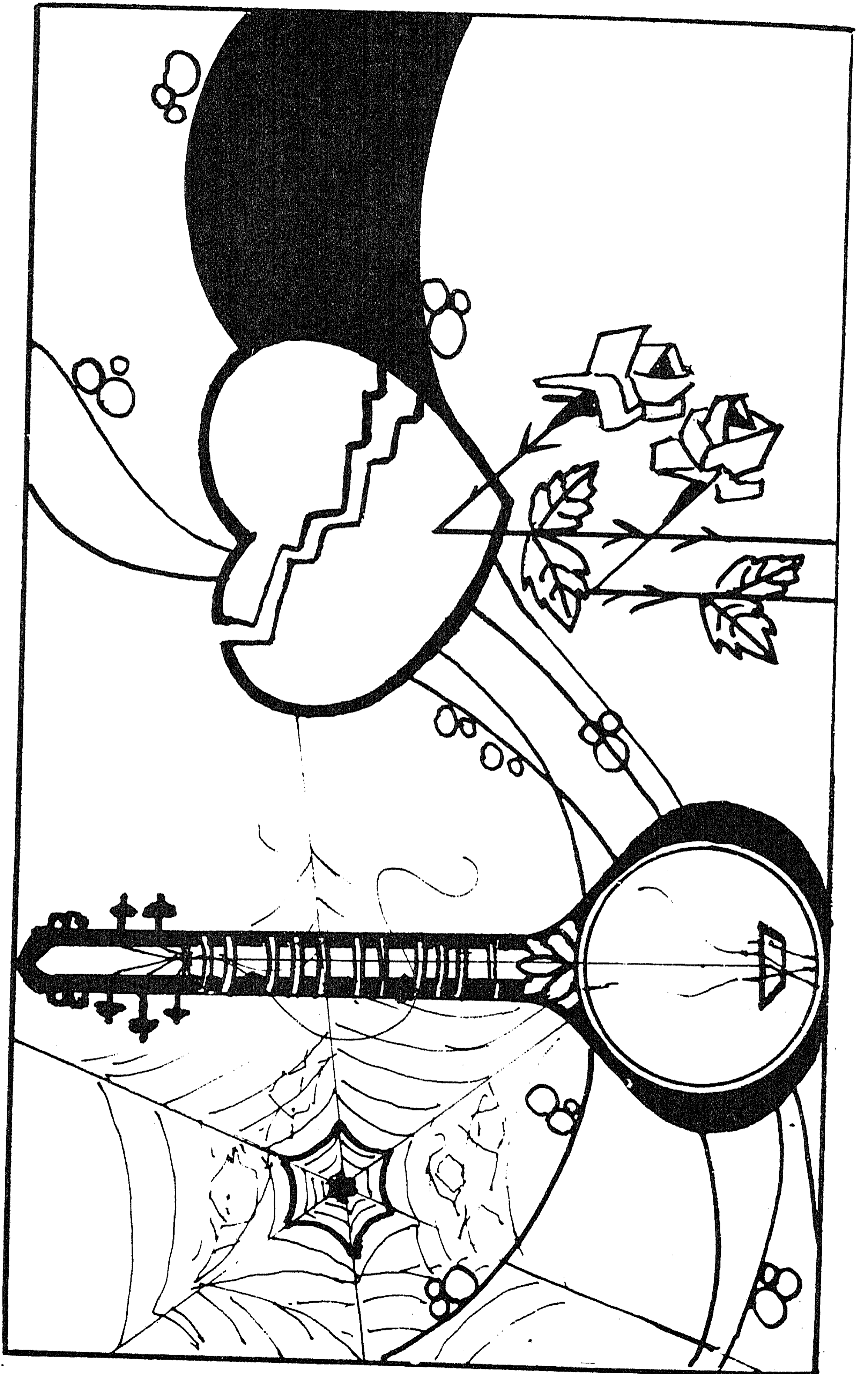
माना कि मेरे सामने
खामोश यह जुबान
है यह तसल्ली भी कि
उनके पास भाषा है
फरियाद तो है पर पीड़ा
उसकी अजीब महान है
हम हैं सामने, फिर भी
आस है न प्यास है
कब पिघल जाएगा गम,
पता किससे मिले
समन्दर तो दिल में है
वह
पर,
पहाड़ न जाने कब हिलें।।
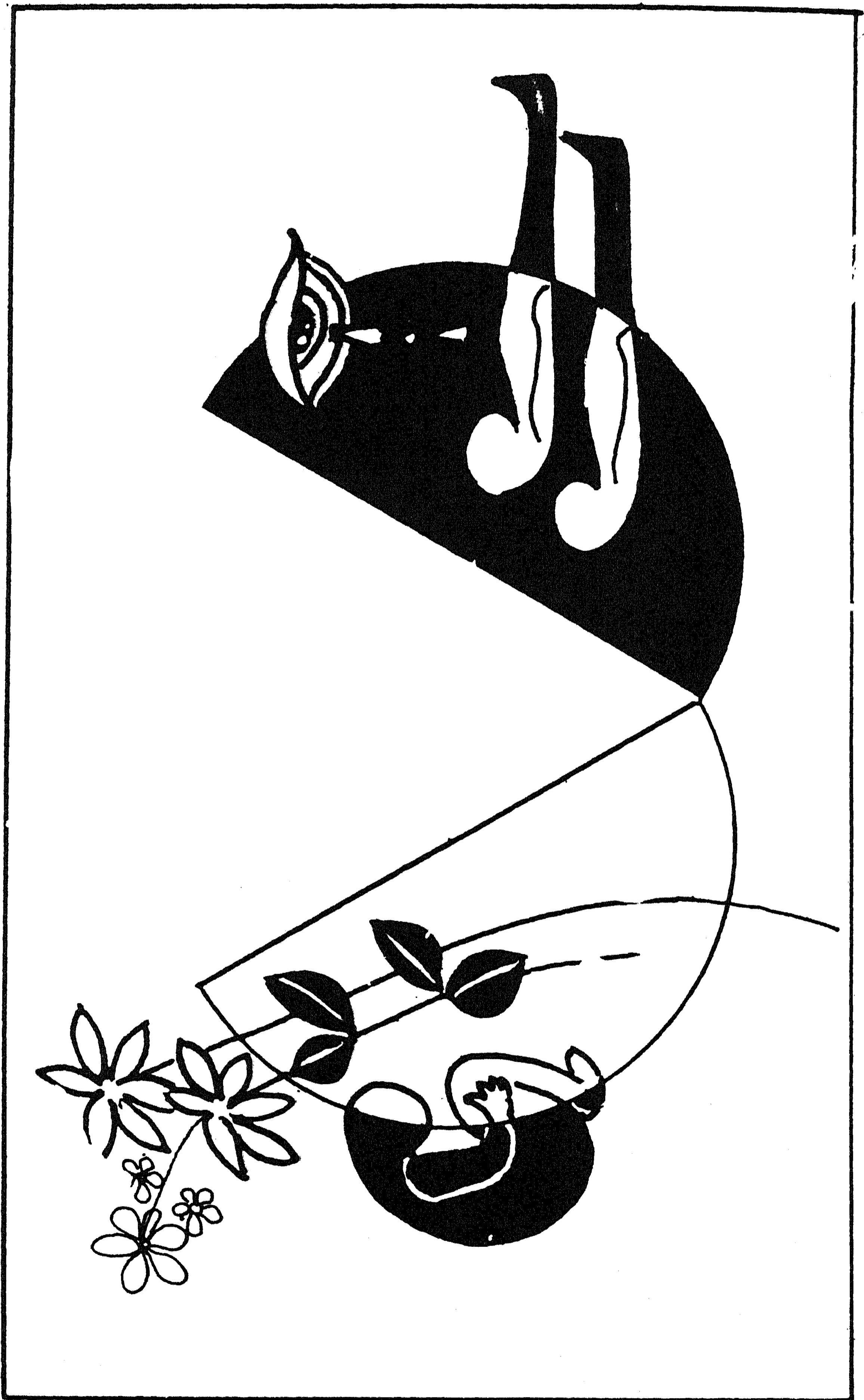
देह है दीप स्तम्भ
जलाने ज्योत प्राण की
जलती है प्राण ज्योति
आत्मा है पगडण्डी
तन और मन के बीच
जन्म से मरण तक का
सेतुबन्ध उम्र तक का अवकाश
जीवन है दुख से सुख
सुख से दुख का अभ्यास
आत्मा के अदृश्य द्वार
दें तो प्राण
हल्की सी भी दस्तक
हो जायें रौशन फिर
सृष्टि के रहस्य-शेष
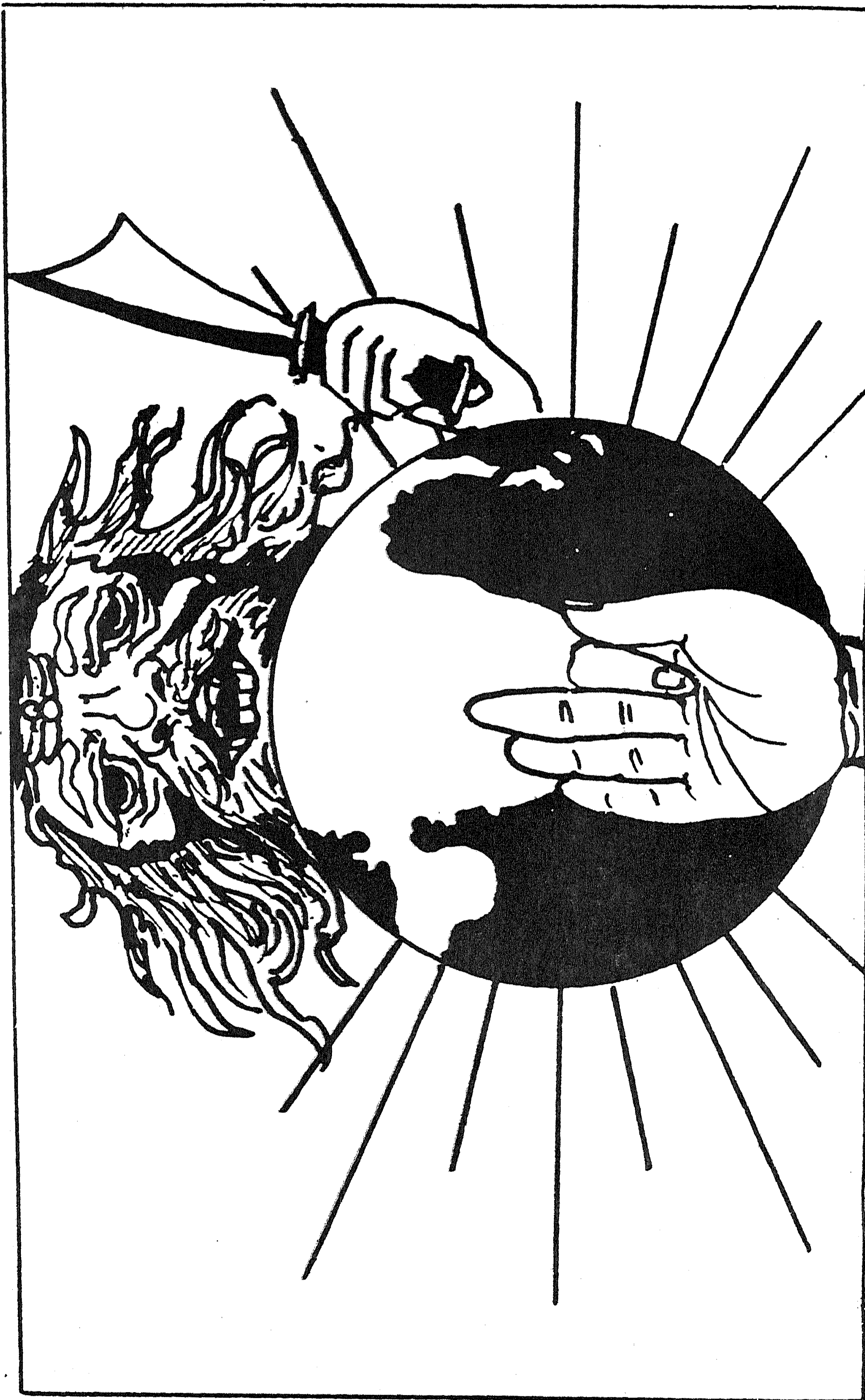
आओ हम कुछ खंडहर मिलकर
किसी नए महल का सृजन करें,
आओ हम सब असफल मिलके
किसी एक सफल को रच दें।

तुम कली बनी या मैं,
बात तो एक ही है,
वही शब्द हैं,
वही पृष्ठ हैं,
और,
वही अध्याय,
शब्द,
पृष्ठ,
अध्याय,
आदि से चले आ रहे है,
अनादि तक चलते रहेंगे,
क्योंकि,
कली का बार-बार जन्म लेना सत्य है,
और,
सत्य है बार-बार विनाश होना,
फिर कहाँ अन्तर आता है,
कली!
तुम
हो
या
मैं

प्रतीक्षा और वायदा
इन दोनों के बीच
जीवन एक लम्बी श्रृंखला है।
जो कभी,
हँसकर उलझती है,
तो कभी रोकर
यही
नियति की सबसे बड़ी लाचारी है,
लाचारी को कुछ लोग,
स्वार्थ का नाम देते हैं,
नहीं कम से कम मैं तो नहीं कहूँगी,
चाँद नारे,
यह क्या लाचारी है,
और अगर है तो
लाचारी नहीं आशा है;
और
अगर आशा ही तो,
मात्र अस्तित्व की निशानी है।।
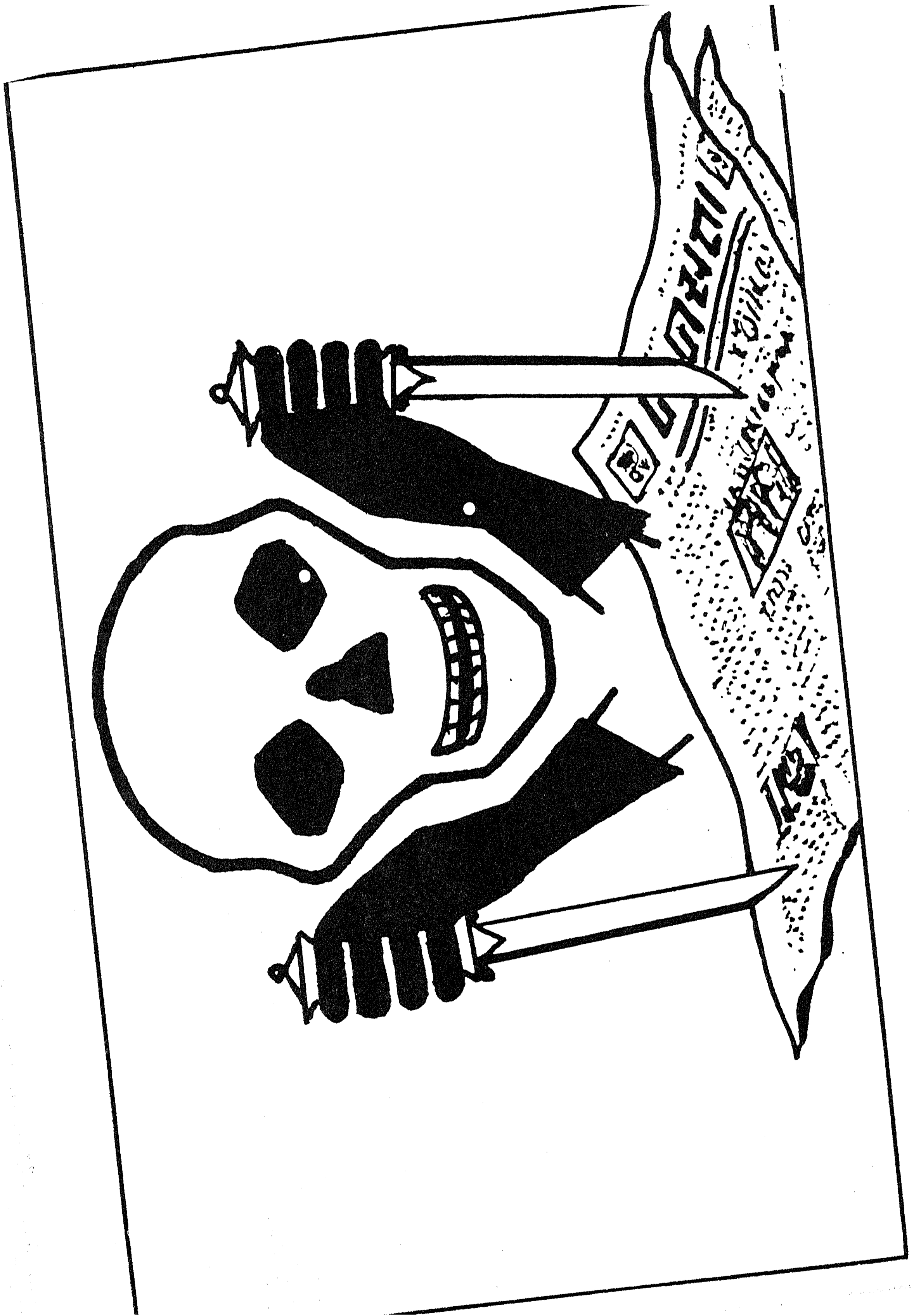
मौत के रूप का इन्तजार हूँ।
दर्द के गुढबार का धुँआँ हूँ।
सर्द पीड़ा का ज्वार हूँ।।
नाकाम बेबसी का इजहार हूँ,
और
यह सब होते हुए,
सच तो यह है कि, दो तलवार लिए,
भयानक शैतान हूँ,
मैं।

जिस दिन तुमको पहले देखा था,
बस मात्र काम्पलैक्स का भास हुआ।

*   *   *

जिस दिन तुमको छुआ था,
एक अल्हड ने ली अँगराई।।

*   *   *

जिस दिन तुमको जाना था,
फ्रस्टैशन का जन्म हुआ

*   *   *

जिस दिन तुमको पाया था,
बस रीतेपन का भार मिला।

और,
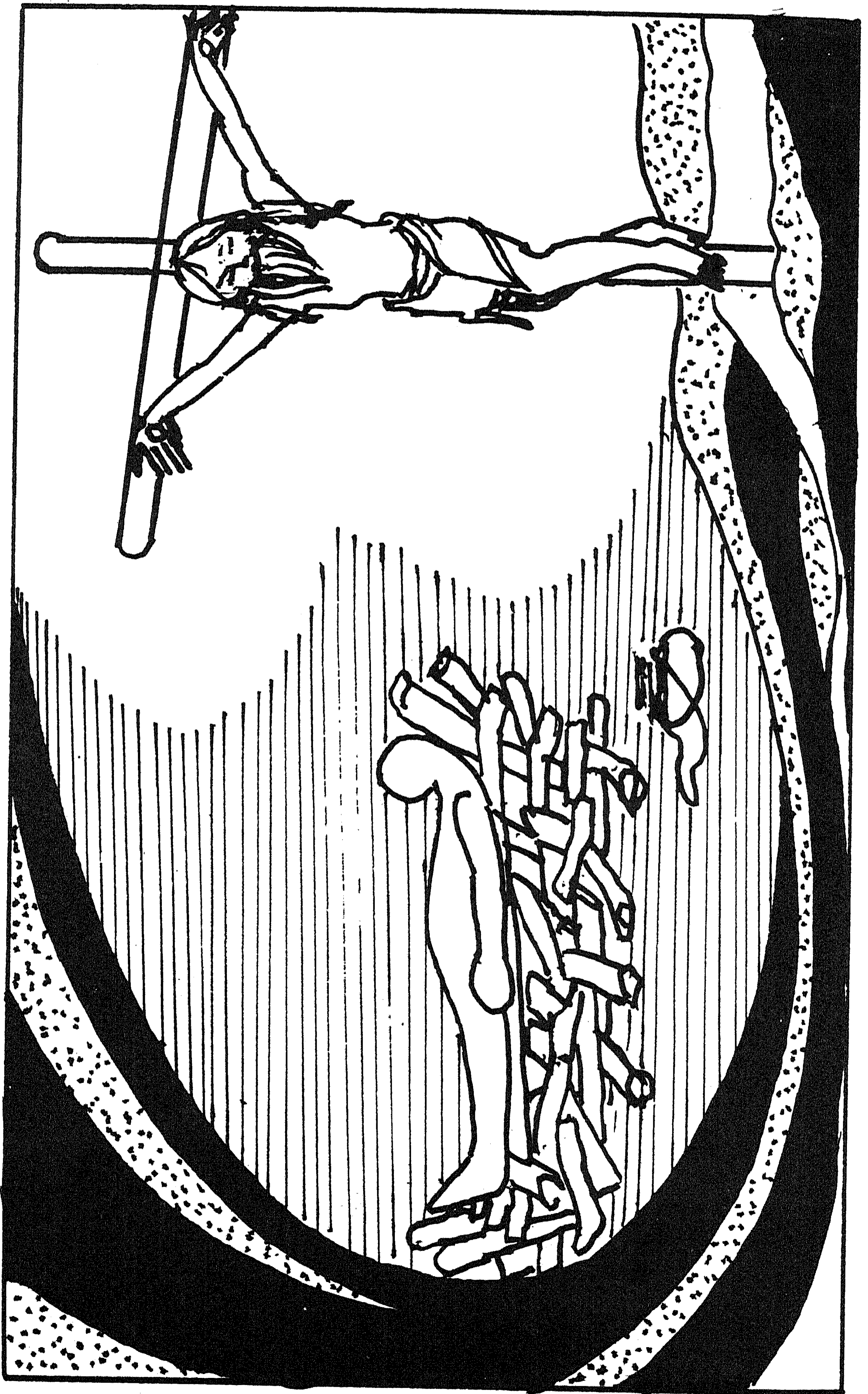
यकीन करो शमा बुझी नहीं है,
सुलग रही है अपने आप,
चिता जली नहीं धधक रही है सब के साथ।

उठो परवानो पंख फड़ फड़ाओ
चिता बुझ जाएगी,
और,
शमा जल उठेगी अपने आप।
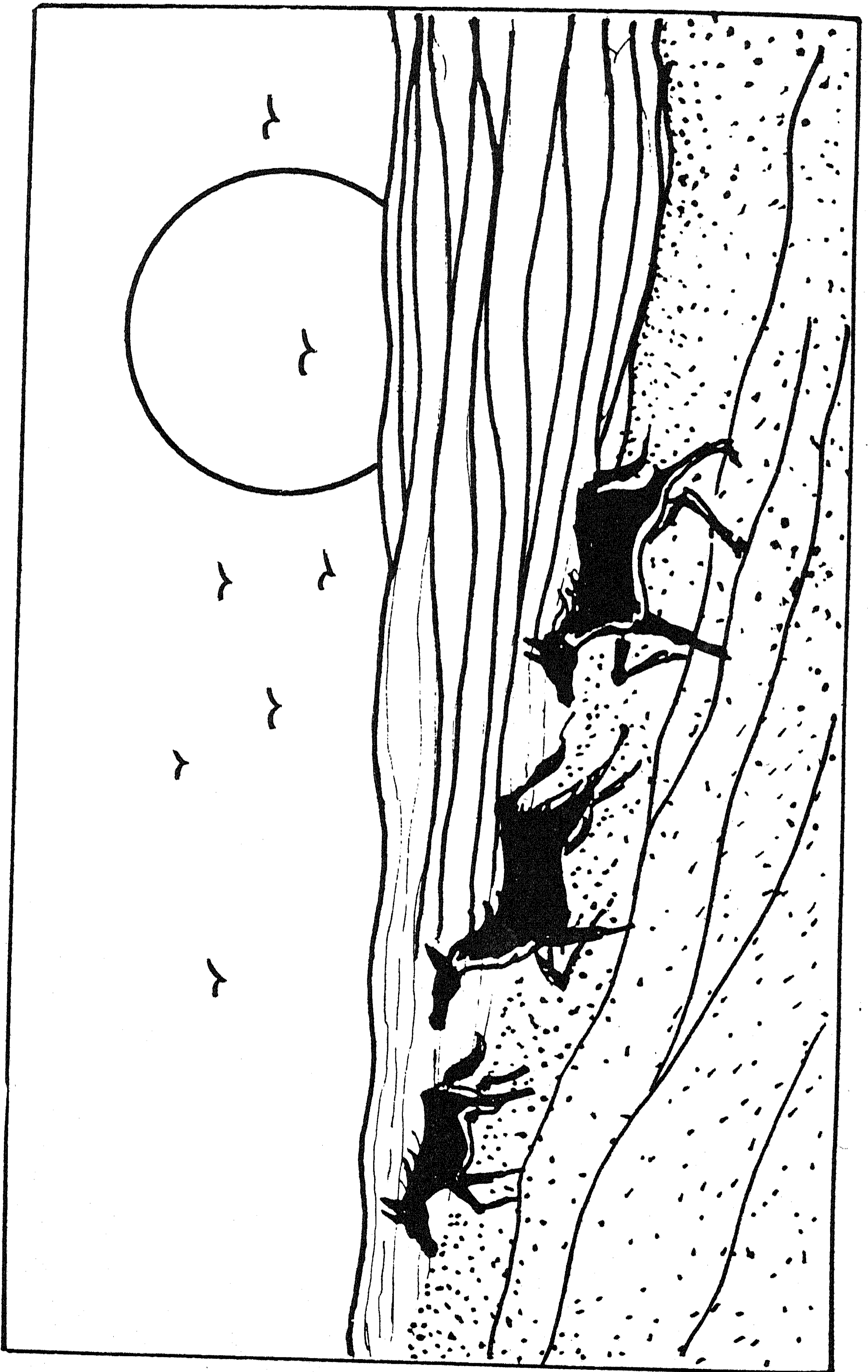
शब्दों की सार्थकता के साथ
शैशव से यौवन की दौड़,
दौड़ी,
अचानक,
एक दिन शब्द को
मन के,
पास,
गिरवी रख दिया,
खिलता यौवन मुरझा गया,
और,
पैरों में गति आ गई,
प्रारम्भ हो गई,
उसी दिन से,
अर्थ हीन दौड़।

वेदना का लोरी ने,
शब्दों का हार बनाकर,
कितनी बार तुम्हे आवाज दी,
पर हर बार,
वह आवाज, पता नहीं किससे टकराई,
और,
वापिस लौट आई,
भावना ने शब्दों को जन्म दिया,
शब्दों ने अर्थों को,
अर्थो ने
'तम्हारा'
'मेरा'
शब्द का गठन किया,
लेकिन
सब व्यर्थ,
सत्य है तो इतना,
तुम हृदयहीन हो,
जड़ हो।
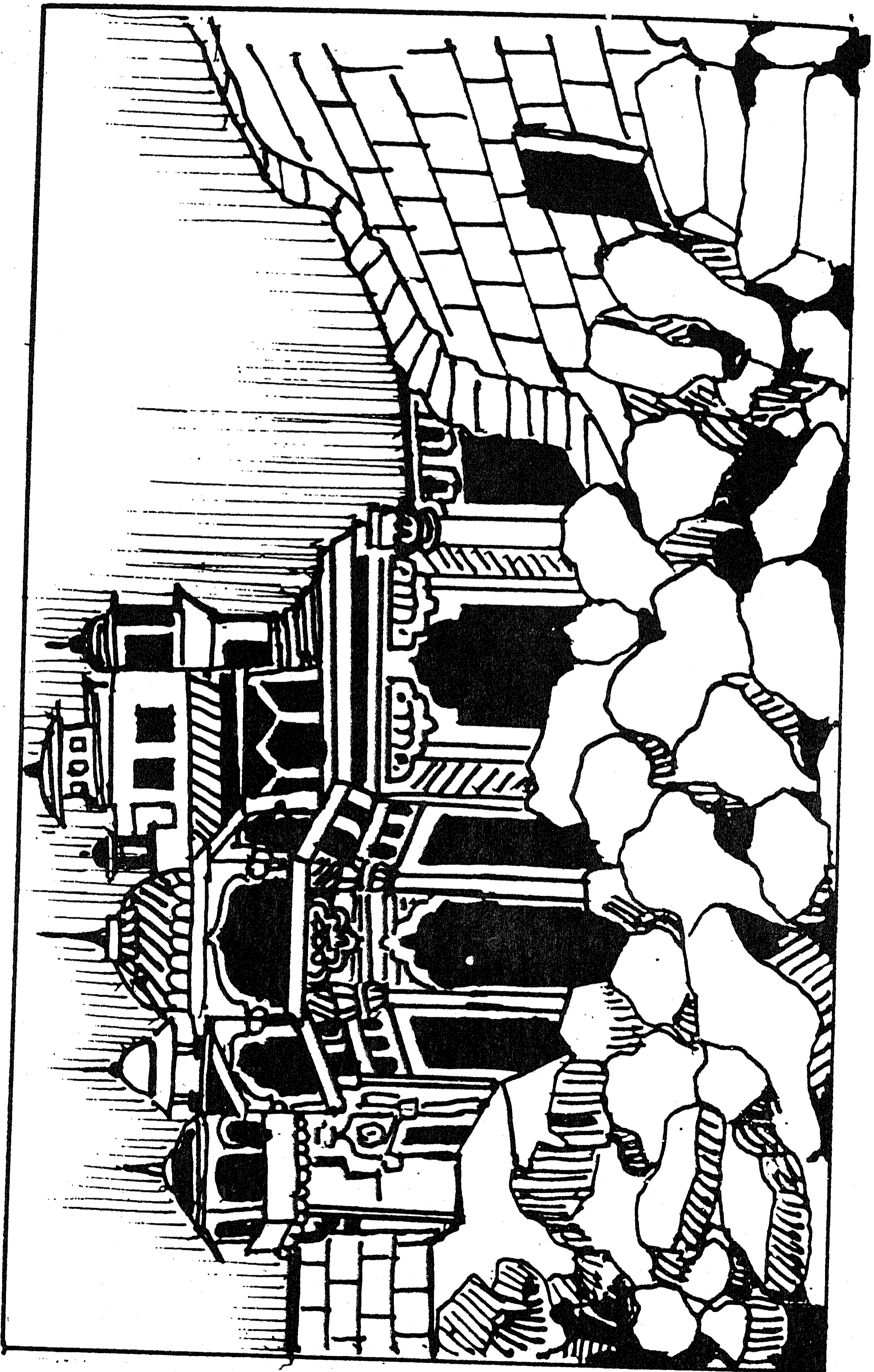
पहली बार,
हाँ पहली बार,
मैंने इन्सान को इन्सानी सतह पर समझने का प्रयत्न किया,
मैंने 'मैं' छोड़ दिया,
मैंने 'स्वतः' तोड़ दिया,
मैंने 'स्वार्थ' तज दिया,
मैंने सुख स्वाहा कर दिया।
अधिकार शब्द से विमुख कर लिया अपने को,
और तब मैंने देखा,
मेरे घरके सब दरवाजे खुले था,
मेरा घर अँधकार में डूबा हुआ था।

क्या लिखूँ ?
क्या कहूँ. . . . . ?

मेरे लिए तो प्यार ही जीवन की सार्थकता थी और है, माँ की गोद में इतना प्यार पाया कि स्वयं को भूल गई, प्यार के ढेरों सपने सँजोए ससुराल आ गई, जीवन सत्य था स्वप्न के बीच हिचकोले खाने लगा।

मेरे स्वप्न सत्य बने ?
या नहीं,
इसके लिए तो एक लम्बा जीवन चाहिए . . . ,
फिर भी मैं खुश हूँ,

इन्दिरा दीदी ने जब मेरे शब्दों को किताब का रुप देने की बात की तब तो मैं वास्तव में आसमान पर नर्तन करने लगी यह तो मैंने सोचा ही नहीं था। मैं व्यक्तिगत रूप से उनकी आभारी हूँ जिन्होंने आज मेरे शब्दों को व मेरी भावनाओं को आकार दिया।

सच तो यह है कि यह मेरा पहला सपना था जो साकार हो गया।। इन्दिरा दीदी ने अपने कविता संग्रह में मुझे सम्मिलित किया मेरे लिए यह कल्पनातीत विषय है।

श्रीमती तविन्दर कौर चावला
"नैनी"
38, सावन सोसायटी,
बटवा रोड, मनीनगर,
अहमदाबाद
दूरभाष –392167

"कुछ लिखती जाऊँ"

कुछ लिखती जाऊँ
आज बस लिखती ही जाऊँ,
सभी भावनाओं को
अपनी कलम में समेट लूँ।
और सारा आँचल खोलकर
सभी फूल फैला दूँ
जिससे
सारी दुनियाँ खुशबु से भर जाए
कही कोई गम, कोई दर्द
न हो
बस सौधीं खुशबु
और
प्यार की महक,
फैला दूँ।

"सदियाँ बीती"

सदियाँ बीती तुम पर मरते
पर तुमने न जाना
मौसम बदले
पर, हम न बदले
तुम मानो
या, न मानो,
बगिया में न जाने आई कहाँ से बहारें
चोरी चोरी
छुपते छुपते
कहाँ से हवा में खुशबु भर आई
वो तुम्हारी ही तो परछाई है
जो बहार ले आई।

"इन्तजार"

किसी नजर को तुम्हारा
आज भी इन्तजार है,
यह धरौदा नहीं
किसी कोने में
तुम्हारी ओर ही
टकटकी लगाए देख रही है,
तुम पलट कर आओगे तो नहीं

तुम नहीं
न सही
तुम्हारी परछाई ही सही
हम तुम्हारे हम शाह न बन पाए
यह टीस हमेशा
दिल में चुभती है।

"रुसवा"

न तुमने चाहा
यूँ राह पर
छोड़कर जाना
न ही हम चाहते थे
तुमसे बिछुड़ना
मगर रुसवा हो गया जमाना,
राहें बदल डाली
जिन्दगी की,
तुम गए उत्तर
तो हम गये दक्षिण
जो तुम्हें मिला,
पैगाम पूर्व का
तो हमे,
पगडण्डी पश्चिम की।

''यादें''

कुछ यादें हैं
मेरे पास तुम्हारी
टटोल जाती हैं
दिल को आकर
जब शाम ढल जाती है,
तो घेरती हैं
वह कुछ धुँधली सी,
परछाईयाँ
नजरों का पैगाम मिलना
अधरों का सिकुड़ना
पलकों का झुकना
और फिर
झुककर उठना
कुछ यादें ही तो हैं
मेरे पास,
तुम्हारी।

''रिश्ते''

कुछ रिश्ते
किसी मोड़ पे
टूट जाते हैं
कुछ रिश्ते
किसी मोड़ पर
जुड़ जाते हैं
न जाने कौन
अजनबी,
किस मोड़ पर
जाना पहचाना, लगने लगता है,
तो किसी मोड़ पर
जान से प्यारे भी अनजान बन जाते हैं।

"चुभन"

जुदाई का मजा
तो मिलन के बाद ही महसूस होता है,
तड़पना, सिसकना,
ये एहसास मिलाप से तो न मालूम होगा।
तुम्हें जानना,
मेरे लिए बहुत मुश्किल है
तुम कभी भँवरा बनकर लिपट जाते हो
कभी काँटा बनकर चुभन देते हो।

"एहसास"

एहसास कब होगा तुम्हें
शायद मेरे रुठने के बाद
तुम तभी जान पाओगे
मेरा प्यार
जब हम पास न होंगे–
यादें तुम्हें बहुत सतायेंगी
हर ओर हमारी खुशबु महकेगी
हर हवा का झोंका मेरा एहसास दिलायेगा।
तब शायद तुम,
मेरा पता जानना चाहोगे, यहाँ-वहाँ
पर, शायद
तब हमें न पाओगे।

‘‘प्यार’’

तेरा प्यार,
श्रद्धा से भरा,
स्वच्छ स्वर लिए, मौन धारण किए,
खामोश नयनों से बोलता था
अपनी ओर आकर्षित करता था।
और,
तब तेरा इन्तजार, एक युग बन जाता था
पर तू क्या जाने बेवफा
तेरे लिए हम कितने युग तड़पे।

‘‘तस्वीर’’

तस्वीर बनाना, बिगाड़ना
या फिर सम्भाल कर
दिल के आइने में बसाना
वक्त सब कुछ बदल देता है
तस्वीर. . . .!
कब आईना बन जायेगी
और
कब आईना टूट जायेगा।

"सखियाँ"

सखियाँ क्या जाने क्या रोग लगा,
दिल को,
दिल तो तुम ले गये थे,
आते थे और ले जाते थे
मुझे विरहन बनाकर छोड़ जाते थे
क्या तुम यह सब जानते हो ?
नहीं तुम क्या जानो
तुम तो हो ही बेवफा, बेदर्द,
भावनाहीन न

"जुदाई"

जुदाई में मालूम नहीं
साँसें भी चली या नहीं
दिल भी धड़का या नहीं
तुम क्या जानो
जुदाई का एहसास
कभी एहसास किया हो,
तभी एहसास कर पाओगे।

तुम तो,
मेरा प्यार हो
मेरा जीवन हो
मेरी साँसें हो
मुझे तो तुमसे प्यारा यह जीवन भी नहीं।
जहाँ तुम हो
वहीं मैं हूँ
तुम न जान पाओगे कि मेरी चाहत कितनी है।
तारे शायद गिने जा सकें,
मगर इन्तजार के पल, कभी नहीं गिन पाओगे।

"चाँद"

यह चाँद करता आँख मिचौनी
कभी दिखता, कभी छिपता,
न जाने क्या क्या याद दिलाता यह।
कभी आँचल पकड़ना, कभी झटक देना
यह मेरा आँचल
यह आँख मिचौली करता चँदा

जब तक दुनियाँ रहे,
यह चाँद तारे, सूरज, किरणें रहें,
यह फूल कलियाँ, यह हवा यह फिजाँ रहे
तुम मेरे रहो,
मेरे रहो।

"साथ"

तुम साथ हो मेरे
तो मुसीबतें भी
हँसते-हँसते झेलते जायेंगे,
तुमने जो दामन छुड़ाया
तो हम बस जमाने को छोड़ देंगे।

"रोजी"

रोजी इन्सान को कहाँ से कहाँ ले जाती है,
दुनियाँ का कोई कोना भी तो ऐसा नहीं
जहाँ सुबह से शाम तक रोजी की तलाश न हो
सुबह से शाम तक का इन्तजार
भटकना, भटकते रहना,
शायद कहीं कभी अरमानों की मंजिल मिल जाए
क्या इसी का नाम,
जिन्दगी है ?

"रात"

न जाने किस्मत में
कितने अँधेरे लिखे हैं,
मालूम ही नहीं पड़ता
कि सुवह हुई या नहीं
हर वक्त ऐसा ही जान पड़ता है
बस लम्बी काली रात,
बढ़ती ही जाती है
कम नहीं होती।

"क्षितिज"

क्षितिज
वह दूर
बहुत दूर दिखता है
आस्था और धरती का मिलन
बाँहें पसारे, हाथ फैलाए
आगे, आगे
बढ़ता मन,
क्या कभी
उस क्षितिज को पा सकेगा।

"कभी"

तुम कभी भी तो
किसी को खुश नहीं कर पाए हो
फिर तुम्हारा जन्म लेना व्यर्थ हो गया
तुम धरती पर बोझ हो
जो तुम किसी को समझ ही नहीं पाए।

"जिन्दगी"

जो कुछ दिया है तुम्हें
इस जिन्दगी ने,
जो कुछ भी पाया है
तुमने इस जिन्दगी से
तुम्हें उसका कर्ज तो उतारना ही पड़ेगा।
यूँ ही चले जाओगे
बिना देखे, मुँह मोड़कर,
तो कभी सुख नहीं पाओगे।

"माँग"

हर रिश्ता तुमसे कुछ माँग करता है
तुमसे कुछ चाहता है,
माँ, बहन, बेटी, पत्नी, ...
सभी रिश्ते निभाओ,
तुम केवल देने के लिए दुनियाँ में आई हो
बस अपना आँचल खोल कर
वह रंग बिरंगे फूल जो तुमने समेटे हैं
सबको बाँट दो,
बाँटती ही जाओ।

"कली"

कौन कहता है, हर कली
फूल बनेगी. . . . . . .,
वक्त से पहले कोई मसल दी जायेगी
बस,
कोई विरल ही होती है जो,
निष्पाप देवी के चरणों में
अर्पित की जायेगी

"साया"

साया तो साया ही रहता है
मेरा हो या तुम्हारा,
हमारे आगे पीछे घूमता है
चाहा तो था,
मेरा साया तुम्हारे
और
तुम्हारा साया मेरे
पीछे रहे,
मगर चाहत से क्या होता है ?
जिन्दगी का सफर बहुत लम्बा है
जब तुम कहीं किसी मोड़ पर मिलोगे
मुझे विश्वास है कि,
तुम कुछ नहीं बोल पाओगे,
बोलेंगी तुम्हारी आँखें उस दिन।

"टुकड़े"

तुमने वादा जो तोड़ा
यह न सोचा,
नाजुक दिल के कितने टुकड़े हो जायेंगे
जिन्दगी में एक ही तो वादा किया था तुमसे,
जिन्दगी में एक ही तो वादा लिया था तुमसे,
तुम वह भी न निभा पाए
अब हम क्या एतबार करें तुम पर ?

"टकटकी"

आज भी टकटकी लगाए
कोई राह देख रहा है
किसी भी आहट में तुम्हारे आने की
क्यों आस होती है तुम कभी पलट कर आओगे
काश कल आज और आज कल
बन जाए
ऐसा एहसास बार-बार क्यों उभरता है?

चलते. . .

कौन जानता था
कौन सी पगडंडी , किस मंजिल,
तक पहुँचेगी,
बस सभी चलते जाते हैं, चलते जाते हैं,
कोई नहीं जानता,
कब, कहाँ कौन सी राह भ्रम जाएगी,
कहाँ कोई साया बन जाएगा,
और
कोई हम सफर मिल जाएगा।

"कारण"

जाम छलक पड़े
तुम्हारे कारण,
यह तो कभी सोचा भी न था
तुम जो सदा मेरे आँसू पोंछते रहे
तुम कारण बने मेरे आँसुओं के
दिल मानने को कभी तैयार ही न था।

"माँ"

माँ
तुझे मैंने देखा, सपने में,
ओ मेरी प्रतिमा!
तुझे पूजने को जी चाहा,
तू कहाँ लोप हो गई
रात भर मैं तुझे ढूँढती ही रही।

"सीप"

सीप में छिपे मोती की तरह
यदि कोई मुझे प्रेमासक्त कर ले
फूल में छिपी सुगन्ध की तरह
यदि कोई मुझे प्रेमासक्त कर ले ?

"समझाए"

जो फिर एक फूल टूट गया
गिर गया, समा गया
धूल में,
पतझड़ छा गया
उस डाल पर सभी गुल हैं
देखो बेताब से बेकाबू से
कोई तो समझाए इन्हें
बहारों के मौसम के बाद,
पतझड़ ही आता है।

"वक्त"

वक्त यादों के जख्म को भरता है
या फिर,
यादें वक्त के साथ और बढ़ती हैं
कुछ भी तो मालूम नहीं
कि वक्त और क्या-क्या करता है
वक्त के फूलदान में
यादों का गुलदस्ता सजाए
हम,
जिन्दगी का सफर तय
करते रहते हैं।

जन्म – 13 अक्टूबर, हैदराबाद (दक्षिण)

शिक्षा – एम. ए. (अ. शा.), एम. ए. (स. शा.), एल. एल. बी., एल. एल. एम, पी-एच. डी., साहित्य रत्न।

अनुभव –

1. आठ वर्ष से अधिक पंचायत एवं समाज कल्याण, म. प्र. में राजपत्रित अधिकारी।
2. अनाश एज्यूकेशन ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी।
3. केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड की मनोनीत सदस्या।
4. अनाश महिला औद्योगिक सहकारी मंडल की अध्यक्षा।
5. इन्डियन कौन्सिल आफ चाइल्ड वैल्फेयर, गुजरात राज्य की सदस्या।
6. आर्थस गिल्ड आफ इंडिया की सदस्या।
7. निडर कच्छ = सहयोगी संपादिका।
8. मीमांसक = मनोनीत संपादिका।
9. विभिन्न सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध।
10. मैण्ड (Mother Nuclear Embracing Disarment) की सैक्रेटरी जनरल, गुजरात चैप्टर की।
11. अब तक तेईस उपन्यास प्रकाशित हो चुके।
12. बहुचर्चित उपन्यास 1. लिथुवानिया की एक शाम। 2. प्रश्नों का रेगिस्तान 3. अनन्त श्री। 4. मत्स्यगन्धा
13. पुरस्कृत उपन्यास 1. मौन पीडा 2. मत्स्यगन्धा 3. अनि अनावृत।
14. राष्ट्रीय स्तर के साहित्यिक सम्मेलनों की सफल आयोजिका।
15. पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और साहित्य जगत का परिचित हस्ताक्षर।
16. आत्म कथ्य 1. श्राउड।
17. संपादिका 1. प्रणय 2. प्रवणम 3. प्रणव

इन सबके अतिरिक्त–देश-विदेश का व्यापक भ्रमण, बहुत बड़े व्यवसाय से सम्बद्ध होने के बावजूद लिखने पढ़ने का अपरिमित शौक।

उनके लिए एक ही वाक्य है–

इन्दिरा दीवान एक शिक्षित सम्पन्न और समर्थ लेखिका हैं।

सम्प्रति

डा० इन्दिरा दीवान

31, सावन सोसायटी,

बटवा रोड, मनीनगर, अहमदाबाद।

दूरभाष आवास– 392367